प्रस्तावना.

सुज्ञ जैन बन्धुओ अने व्हेनो.

आपने सुविदित छे के आवा हमेश–मनना वांचवा विचारवा जेवा लघु पुस्तकनी प्रस्तावनानी अति आवश्यकता होइ शके नहि, छतां आ पुस्तक शा हेतुथी बहार पाडवामां आव्युं, तेम कोना सदुपदेशथी विगेरे सहज हकीकत बहार मुकवी उचित धारी छे.

घणा आनन्दनी वात छे के हिंदुस्थानना घणा शहेरो अने गामोमां ज्यां ज्यां आपणा पवित्र पूज्यपाद उत्तम चारित्र रत्नथी विभूषित गुरुणीजी महाराजाओ विचरी रह्या छे त्यां त्यां आधुनिक समयमां जैन श्राविकाओमां तेम बालिकाओमां खास परमपवित्र वितराग परमात्माना अविच्छिन्न प्रभावशाली धर्म क्रियाओ तेम ते परमात्माना अलौकिक ग्रन्थोने पठनपाठन करवाना उत्तम मार्ग पूरतो उत्साह दृष्टिगोचर थाय छे. दरेक श्राविका अने बालिकाओ पोतानुं दुर्लभ मानुष्य जीवन जो वितराग परमात्माना धर्म सेवनथी तेमज पठनपाठनथी सफल करता न शिखाय त्यां सुधी आ असार दुनियामां आत्म कल्याणनो बाकी शो भाग बाकी रह्यो छे? मतलब के तेम जो आ उत्साहने पूर्ण करवा माटे अने क्रमानुसार चार गतिना चोर्यासी लक्षना परिभ्रमणा करवारूप दरेकादि द्वारना पुस्तको प्रसिद्ध थयेला दृष्टिगोचर थाय छे तेमां पण आवा विस्तार पुस्तक प्रसिद्ध थयेल नहीं होवाथी अने तेनी घणी जरूर जणाती होवाथी प्राचीन हस्तलिखित ४२ द्वारोमां मन " परम उपकारी साध्वीजी

वर्गा तेनी मूल कींमते वेचाण करेली छे तेमां जे खर्चमां खुटता रुपैया पुरा करी जे वधे ते आ दंडकादि द्वार संग्रह नामना पुस्तक मां वापरवा पूज्यपाद गुरुणीजी महाराजे परवानगी आपेली छे कारणके आ पुस्तकमां बीलकुल नहींज जेवी अल्प मदद मळेली छे तो पण आ पुस्तक पुज्यथीए योग्य साधुसाध्वीजी महाराजाने भेट आपवा मुकरर करेलुं छे अने श्रावक श्रावीकाओने जेमने आ पुस्तकनी जरुर होय तेमने मसिद्ध कर्तानी पासेथी. योग्य कींमते मली शकशे.

जेवी रीते उक्त गुरुणीजी महाराज तरफथी उपरना छपावेला बे पुस्तको लोकप्रीय थइ पडया तेम आ त्रीजुं पण अती उपयोगी पुस्तक लोकप्रीय थइ पडशे तेम अमारु सहज मानवुं छे कारण के घणा विस्तारवाळा जाणवा लायक विषयोथी भरपूर छे. वली आ पुस्तकनी आवकनो कोइने अंगत लाभ पण नथी तेनी जे कींमत वेचाणथी उपजशे ते ते पुस्तकना खर्चमां जतां बाकी वधशे ते तेवाज पुस्तको उद्धार अगर ज्ञान खातामांज जवानी छे. जेथी आ पुस्तक खरीदनारने ज्ञान दान अने ज्ञाननुं मात्र थवुं एम बेवडो लाभज छे.

आ पुस्तक छपाववानो उपदेश करनार पूज्यपाद गुरुणीजी महाराज श्री देव श्रीजीना सुविहित शिष्या साध्वीजी श्रीश्री १००८ बार सौभाग्य श्रीजीमहाराजनो खरा अतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे के जे माहा उपगारी गुरुणीजी माहाराज तरफथी उपर छपावेला उत्तम अने लोकप्रीय बे पुस्तको तो बाहार पडी आ त्रीजुं पुस्तक पण तेमनाज उपदेश अने प्रेरणानुं फल छे.

आ पुस्तक मसिद्ध करवामां जे जे दाना गृहस्थो तथा व्हेनोए

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे जे गृहस्थो तथा बहेनोए मदद करेली छे तेनां मुबारक नामो नीचे मुजब छे.

२५—०—० कोकशी अमरचंद मुळचंदनी पत्नि सोभाग्यवंती बाइ समरत मुं. खंभात बंदर.

२५—०—० अमरचंद कानजीनी विधवा बाइ दीवाळीबाइ मुं. मांगरोळ.

१०—०—० काशीदास उमेदचंद मुं. अमदावाद.

५—०—० मफाभाइ चुनीलाल डागवाळा मुं. अमदावाद.

५—०—० हीरालाल चुनीलालनी विधवा बाइ जासुद मुं. अमदावाद

कुल ७०—०—०

सूचना.

पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मूकी आशातना करवी नहि. तेमज अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडकवुं नहि. उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

मंगल.

जैनो धर्मः प्रकटविभवः संगतिः साधुलोके, विद्वद्गोष्ठी वचनपटुता कौशलं सत्क्रियासु । साध्वी लक्ष्मीश्चरणकमलोपासना सद्गुरूणां, शुद्धं शीलं मतिरमलिना प्राप्यते नाल्पपुण्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—प्रगट प्रभाववाळो जैनधर्म, सत-पुरुषोनी संगति, ज्ञानी पुरुषो साथे गोष्ठी, वाक्चातुर्य, शुभकार्यमां कुशळता, न्यायोपार्जित लक्ष्मी, सद्गुरुना चरणकमळनी उपासना, निर्मळ शील अने शुद्धमति, एटलां वानां मनुष्य पुण्ययोगेज प्राप्त थइ शके छे.

अथ विषयानुक्रमणिका.



श्री सर्वज्ञाय नमः

अथ श्री दंडकादिक द्वार लीख्यते.

॥ गाथा ॥

दंसग भुवण शरीरं, उगाहणा लेस्सेंदिय समुग्घाया.
संघयण संठाण पाणा, पज्जति योनी कुलकोडी. ॥१॥
नाणान्नाणं दंसण, दिट्ठि जोगोवओग गुण ठाणा.
आहार अणाहारे, किमाहारगा जीव भेया. ॥ २ ॥
वेअ कसाय सन्ना, य कायठिइ ठिइकाळत्त चेव.
चवणोववाय संख्या, गइ आगइ संपया देव. ॥३॥
संज्या जगत्त पडि–भाव अप्प बहु सन्निय इत्थाइं.
दाराइं इम वुत्ता, मरणाथ्यं संगहे इथ्यं ॥ ४ ॥

१ दंडक २ भुवन ३ शरीर ४ अवगाहना ५ लेश्या

६ इंद्रिय ७ समुद्घात ८ संघयण ९ संस्थान १० प्राण ११ पर्याप्ति १२ योनी १३ कुळ कोमी १४ ज्ञान १५ अज्ञान १६ दर्शन १७ द्रष्टि १८ जोग १९ उपयोग २० गुणगणा २१ आहार २२ आहारनी इछा २३ किमाहार २४ जीवभेद २५ वेद २६ कषाय २७ संज्ञा २८ स्वकाय स्थिति २९ विरहकाल ३० चवन संख्या ३१ उपजवानी संख्या ३२ गति ३३ आगति ३४ संपदा ३५ देवद्वार ३६ संजति ३७ जराज ३८ परिग्रह ३९ अल्प बहुत्व ४० संज्ञी अने वळी ४१ प्रकीर्ण विगेरे एकतालीस द्वारोना संभारवाना अर्थे अहीं संग्रह करीएछीए.

अथ पहेलुं दंडक द्वार प्रारंभः

दंड्यते जीवा यस्मिन स दंडकः—जीवो जेने विषे दंडाय छे तेने दंडक कहीए. ए दंडक चोवीश छे के जेमां सर्व संसारी जीवो परिभ्रमण करे छे. ते दंडक ना नाम तथा वाख्या निचे प्रमाणे.

प्रथम नारकीनो एक दंडकः—नारकी एटले अकर्मोदयवंत जीवोनुं वसवुं छे जेमां एवुं जे स्था-

क्ष्म कहेवाय. बादर एटले स्थुल शरीरवाळा चक्षुर्थे देखी शकाय एवा बादर नाम कर्मोदय वंत, तीयत स्थानवर्त्ती अने थीजाथी छेद भेद थाय एवा जीवो बादर कहेवाय, ते बादर पृथ्वीकायना शुद्ध, वालुका, मणसिल, शर्करा, सुंहाळी, अने खरपृथ्वी ए मूळ छे, तथा बीजा स्फटिक रत्न, मणिरत्न, परवाला हिंगळोक, हरताळ, पारो, सोनुं, रुपुं, तांबु, जसत, शिशु, कथीर, अवरख, खमी, रमची, तूरी माटी, खारी माटी, सुरमो, सिंधव, संचळ, तथा पाषाणनी सर्व जातीउ अने मीठुं विगेरे घणा भेद बादर पृथ्वीकायना छे. ॥ एवं बार दंमक ॥

अपकाय—पाणीना जीवो—तेनो एक दंमक, तेना मूळ बे भेद छे एक सुक्ष्म अने बीजो बादर तेमा सुक्ष्म ते पुर्वोक्त रीते जाणवा अने बादर ते भूमीनुं पाणी,[1] आकाशनुंपाणी,[2] झाकळनुं,[3] करानुं,[4] हीमनु, खाखाघासउपरनुं धुंवरीनुंतथा घनोदधि अने

१ कुवा अने वावडी वगेरेनुं पाणी. २ नदी तळाव अने सरोवरनु पाणी.

तनोदधि विगेरेना पाणी ते सर्वं बादर अपकायना भेदो जाणवां. ॥ एवं तेर दंडक ॥

तेउकाय अग्निना जीवोनो एक दंडक. तेना सुक्ष्मने बादर एवा बे भेद छे, सुक्ष्म ते पूर्वोक्त रीते जाणवा ने बादर ते अंगारानोअग्नि ज्वालानो अग्नि, भरसाम्यनो अग्नि, उल्कापातनो अग्नि, कणीआनो अग्नि, असनी (घसारायी अग्नि उत्पन्न थाय छे ते जेवा के लोढुं चकमक अरणी वगेरे घसवायी अग्नि पेदा थाय ते), अने विजली विगेरे बादर अग्निकायना भेदो छे. ॥ एवं चौद ॥

वाउकाय--वायुना जीवोनो एक दंडक. ते वायुकायना सुक्ष्मने बादर एवा बे भेद छे. तेमां सुक्ष्म ते पूर्वोक्त रीते जाणवा अने बादरने उद्भ्रामक (उंचे चमतो) वायु, उत्कलिक (निचे पडतो) वायु मंडलीक (वंटोळीओ) वायु, महा (मोटो-जे आंधी कहेवाय छे ते) वायु, शुद्ध (सुस्वकारी झीणो) वायु गुंज (गुगुवाट करतो) वायु, घनवायु अने तन

वायु वगेरे बादर वायु कायना घणा नेदो छे. तेनो एक दंमक ॥ एवं पंदर ॥

वनस्पतिकाय–जाड पालाना जीवोनो एक दंमक ते वनस्पतिकायना, साधारण अने प्रत्येक एवा बे नेद छे, तेमा साधारणएटले अनंताजीवोनुं एक शरीर होय, ते साधारणवनस्पतिकाय, तेना बे नेद, एक सुक्ष्मने बीजो बादर, सुक्ष्म वनस्पतिकाय ते पूर्वोक्त सुक्ष्म जीवोना जेवा जाणवा, अने बादर साधारण वनस्पतिकायने जेना सांधा नसो गांठा वगेरे प्रगट न देखाताहोय नांगवाथी सरखा नाग थता होय, तांतणा(रेशां)विनाना होय अने छेदीने वाववाथी पण उगे एवी सर्व वनस्पति जेवी के सर्व जातना कुंणाफल, कंद, अंकुरा, कुंपळो, पांचवर्णनी लील फूल, बिलाडीना टोप, लीलुं आदु, लीली हळदर, लीलो कचुरो, मोथ, थेग, थोर, गळो, अने सण वगेरेना पांदमा तथा कुंवारनुं पाठु वगेरे बादर साधारण वनस्पतिकायना घणानेदोजाणवा. प्रत्येक वनस्पतिकाय ते एक शरीरने वीषे एक जीव होय ते

जातना तेइंडियजीवो जाणवा, तेनो एक दंरुक, अने स्पर्श–रस–घ्राण अने चक्षु (आंखो) ए चार इंद्रीयवाळा जीवो जेवा के विंछी, जमरा, जमरीउं, तीमो, मांखीउं, मांस, मछर, कसारी, करोळीआं, खरूमांकडी अने पतंगीआ विगेरे घणीजातना चौरींडीय जीवछे तेनो एकदंरुक॥ एवं १ए दंरुक थया॥

तिर्यञ्च पंचेंडिय–तिर्यच–तीर्छा (वांका) चाले, अथवा स्वकर्मोदयथी सर्व दंरुके परिज्रमण करे एवा पंचेंडिय स्पर्श, रस घ्राण चक्षु अने श्रोत (कान) ए पांचेइंडियवाळा जीवो ते तिर्यंच पंचेंडिय कहेवाय तेना मूळ पांच जेद छे. ते आ प्रमाणे मांठला–काचवा, कुंरु, अने सुसुमार विगेरे जलचर,१ गाय, जेंश, घोमा, हाथी वगेरे चोपगा, २ नोळीआ, उंदर, खिसकोली वगेरे जुज परी सर्प, ३ सर्प, अजगर वगेरे उर परि सर्प, ४, चकली कागमा कावर पोपट मोर वगेरे रुवांटानी पांखवाळा अने चामाचीमीआं वगेरे चामनानी पांखवाळा तथा संकोचेली अने वीस्तारेली पांखोवाळा ते सर्व खेचर ५ कहेवाय. उपर क-

जन १२ कला पहोळो अने २४९३२ जोजन ना आ-
शरे लांबो पीळा सोनामय पूर्व पश्चिम लवण समुद्र
पर्यंत चुल्ल हेमवंत नामनो पर्वत छे, तेना बन्ने छेडा
ने विषे लवण समुद्रमां ८४०० जोजनथी कांइक अ-
धिक लांबी एवी बब्बे दाढा विदिशीने विषे नीकली
छे. ते चारे दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपछे ते
अंतरद्वीप मांहेला पहेला चार अंतर द्वीप जगती-
थी ३०० जोजन दूर, ३०० जोजनना विस्तारवाळा छे,
तथा जगतीथी ४०० जोजन दूर, ४०० जोजनना वि-
स्तारवालुं वीजुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क छे, एम सर्वने
विषे १०० जोजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं
चतुष्क ९०० जोजन दूर, ९०० जोजनना विस्तारवालुं
छे एम २८ अंतरद्वीपो थया, तेमजवळी मेरु पर्वतथी
उत्तर दिशाए ऐरवृत्त क्षेत्रने छेहे हेमवंत सदृश्य
शिखरी पर्वत छे तेने पण पूर्वोक्त प्रकारे चार दाढाउ
छे तेमां पूर्वोक्त रीते सात सात अंतरद्वीपो छे तेथी
ते २८ अंतरद्वीपो अने प्रथमना हेमवंतपर्वतना
२८ अंतरद्वीपो मळी ५६ अंतरद्वीपो थया. तेमां युग-

ज्योतिषि-ज्योतिष्य प्रकाशवाळा जे देव ते
ज्योतिषि कहीए. ते चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा
ए पांच प्रकारनां छे. तेमां अढीद्वीप मांहेला पांच
चर छे अने अढीद्वीप बाहेरना स्थिर छे. एम दश
भेद थया तेनो एक दंडक ॥ एवं २३ दंडक ॥

वैमानिक-विशिष्ट पुन्ये करी घणा जीवो थकी
उपभोग थाय छे जेनो ते विमान कहिए ते विमा
नने विषे रहेला जे देवो ते वैमानिक जाणवा तेन
बे भेद छे, तेमां एक कल्पोत्पन्न अने बीजा कल्पा
तीत. तीहां कल्प ते स्थिति, जाति, सामानिकावि
व्यवस्था मर्यादा छे ज्यां अथवा तिर्थंकरना कल्या
णादिके मनुष्य लोकने विषे आववानो व्यवहार छे
जेनो तेने कल्पोत्पन्न कहीए तेनां नाम सौधर्म देव
लोक, इशानदेवलोक, सनतकुमारदेवलोक, माहेन्द्र
देवलोक, ब्रह्मदेवलोक, लांतक देवलोक, महाशुक्र देव
लोक, सहस्रारदेवलोक, आणंतदेवलोक, प्राणंत देव
लोक, आरणदेवलोक, अने अच्युत देवलोक, एम बार
छे. कल्पातीत-कल्प-स्थिति, जाति, सामानिकावि

छे के. ॥ गाथा ॥

तथ्थ सहस्सा सोलस, खरकंड पंक बहुल कंडंतु;
चुलसी सहस्साइं, असइ जल बहुल कंडेतु. ॥ १ ॥

अर्थः–ते रत्न प्रज्ञामां पहेलो सोल हजार जोजन कठण रत्नमय कांड छे, बीजो चोरासी हजार जोजनना पंक (कादव) बहुल कांड अने एंसी हजार जोजननो जल बहुल कांड छे, ए रीते त्रण कांड छे, तेमां पहेले कांडे रत्न घणा छे, माटे तेनुं नाम रत्न प्रज्ञा, बीजी नरक पृथ्वीने विषे कांकरा घणां होवाथी तेनुं नाम शर्करा प्रज्ञा, त्रीजी नरक पृथ्वीने विषे वेलु (रेती) घणी होवाथी तेनुं नाम वालुका प्रज्ञा, चोथी नरक पृथ्वीने विषे कादव घणो होवाथी तेनुं नाम पंक प्रज्ञा, पांचमी नरक पृथ्वीने विषे धुमाडो घणो होवाथी तेनुं नाम धुम प्रज्ञा, छठी नरक पृथ्वीने विषे अंधकार घणो होवाथी तेनुं नाम तमप्रज्ञा अने सातमी नरक पृथ्वीने विषे घणो घणो अंधकार होवाथी तेनुंनाम तमतमप्रज्ञा कहेल छे, एम साते नरक पृथ्वीनां गुण निष्पन्न गोत्र जाणवा.

मुजब छे, १ सीमंतो २ रोरुउ ३ रंत्र ४ उज्जंत ५ संभ्रात ६ असंभ्रात ७ विभ्रांत ८ तप्त ९ शीत १० वक्रान्त ११ अवक्रान्त १२ विकत्र अने १३ रोरुक ते दरेक प्रतर त्रण हजार जोजनना ऊंचा, असंख्यात जोजनना लांबा पहोळा अने अगीयार हजार पांच सो त्यासी जोजन उपर एक जोजनना त्रीजा नाग जेटला अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे छे. तेमां त्रीस लाख नरकावासा छे. ते बे प्रकारना छे. १ पुष्पावकीर्ण एटले बुटा फुलनी पेठे ज्यां त्यां रहेला छे, ते ओगणत्रीस लाख पंचाणुं हजार पांचसो सडसठ छे. २ श्रेणीबंध चार हजार चार सो तेत्रीस छे. एम बंने मळी ३०००००० नरकावासा छे. पहेला सीमना नामना प्रतरना मध्य नागमां सीमंत नामनो इंद्रक [मूख्य]नरकावासो पीस्तालीस लाख जोजननो लांबो पहोळो छे. अने बाकीना सर्वे नरकावासा संख्याता तथा असंख्याता जोजनना लांबा पहोळा छे. तेमां नारकीना जीवो रहे छे.

बीजी शर्करा प्रभा नरकपृथ्वी–एक लाख बत्रीस

हजार जोजन जाम्री, असंख्याता हजार जोजन वि-
स्तारवाळी अने विस्तारथी त्रण गणी झाझेरी परि-
धिए करीने सहित ऊालरना आकारे छे. परिधिना
फरता वळीयाकारे छ जोजन एक गाउ उपरांत गा-
उना त्रीजाभागसुधी धनोदधि, चार जोजन त्रण
गाउ सुधी घनवात अने एकजोजन वे गाउ उपरांत
गाउनात्रीजाभागसुधी तनवात छे. ने ते पछी अ-
लोक छे. ने नरकपृथ्वी नीचे वीसहजारजोजन ध-
नोदधिनो पींम छे. तेनी नीचे घनवात, तनवात अने
आकाशना पींम अनुक्रमें नीचे नीचे एक वीजाथी
असंख्यात असंख्यात जोजन पूर्वोक्त रीते रहेला छे.
तेनी नीचे त्रीजी नारकी छ. हव ने शर्करा प्रत्रा न-
रकपृथ्वी एक लाख बत्रीश हजार जोजननी जेजाडी
कही छे तेमांथी उपर तथा नीचेथी एक एक हजार
जोजन काढीएत्यार वाकीनी एक लाख त्रीश हजार
जोजन पृथ्वी रही तेने विषे अगीयार प्रतर छे. ते
नीचे मुजब छे–१ स्तनिक २ स्तनक ३ मणक ४ चणक
५ घट्ट ६ संघट्ट ७ जीप्त्र ८ अजीप्त्र ९ लोल १०

छे. एम बन्ने मळी १५००००० नरकावासा छे. ते स
नरकावासामां केटलाएक संख्याता तथा केटलाएक
असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां छे. तेमां नार
कीना जीवो रहे छे.

चोथी पंकप्रज्ञा नरकपृथ्वी—एक लाख वीस हजा
जोजननी जाडी, असंख्याता जोजननी विस्तारवाळ
अने विस्तारथी त्रणय गणी झाझेरी परिधिएकरीने
सहीत झालरनां आकारे छे. परिधिनां फरतां वली
याकारेसातजोजनसुधीघनोदधि, पांचजोजनने एव
गाउघनवात, अनेएकजोजननेत्रणगाउ सुधीतनवात
छे. ने तेपछीअलोकआवेछे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वी
शहजारजोजनघनोदधिनो पींडछे, तेनीनीचेघनवात
तनवातअनेआकाशनापींड अनुक्रमे नीचेनीचे एव
बीजाथी असंख्यातअसंख्यातजोजनना पूर्वोक्तरीते
रहेलांछे, अने तेनीनीचे पांचमीनरकपृथ्वी छे.हवे ते पंक
प्रज्ञा नरकपृथ्वी जे एक लाख वीश हजार जोजनन
जाडी कही छे. तेमाथी उपर तथा नीचेथी एकेव
हजार जोजन काढीए त्यारे बाकीनी एक लाख अ

एकगाउनात्रीजाजागसुधी घनोदधि, पांचजोजन अने बेगाउसुधी घनवात अने एकजोजनत्रणगाउउपरांत एकगाउना त्रीजाज्ञागसुधी तनवातछे. ने तेपछी अलोकछे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वीशहजारजोजन घनोदधि नोपींम्छे, तेनीनीचे घनवात, तनवात अने आकाशनांपींम् अनुक्रमे नीचेनीचे एकबीजाथी असंख्यात असंख्यातजोजनना पूर्वोक्तरीतेरहेलांछे अने तेनीनीचे छठीनरकपृथ्वी छे.

हवे ते धुमप्रज्ञा नरकपृथ्वी जे एक लाख अढारहजारजोजननीजाडीकहीछे. तेमांथी उपर तथा नीचेथी एकेक हजार जोजन काढीए त्यारे बाकीनी एकलाखसोलहजारजोजन पृथ्वी रही तेने विषे पांच प्रतर (माल) छे, तेना नाम–खात, तमस, जस, अंध, अने निमिस. ते दरेक प्रतर त्रण हजार जोजननां उंचा असंख्यात जोजननां लांबापहोळां अने पचीसहजारबसेंपचासजोजननां अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे छे. तेमां त्रणलाख नरकावासाछे, ते बेप्रकारनांछे. एकपुष्पावकीर्ण एटले छुटां

पृथ्वीछे.हवे ते तमप्रभा नरकपृथ्वी जे एकलाखसोळह
जार जोजननी जाभीकहीछे. तेमांथी उपर तथा निचेथ
एकेक हजारकाढीए त्यारे बाकीनी एक लाख चौ
हजार जोजन पृथ्वी रही तेने विषे त्रणप्रतरछे तेन
नाम-वाही, वादल, अने नलक, ते दरेक प्रतर त्रण
हजार जोजननां उंचा, असंख्यात जोजननां लांब
पहोळा अने बावन हजार पांत्रशो जोजननां अंत
एकबीजाथी निचे निचे छे. तेमां नवाणुं हजार
नवसो पंचाणुं नरकावासा छे ने बेप्रकारनांछे नवाणुं
हजार नवसो बत्रीस पुष्पावकीर्ण अने त्रेसठ श्रेणी
बंध एम बन्नेमळी ९९९९५ नरकावासा छे. ते सर्व
नरकावासामां केटलाक संख्याता अने केटलाक अ-
संख्याताजोजनना लांबापहोळानरकावासा छे. ते
सर्वमां नारकीनां जीवो रहे छे.

सातमी तमःतम प्रभा नरकपृथ्वीएक लाख आठ
हजारजोजननीजाडी, असंख्यातांहजारजोजननीवि-
स्तारवाळी अने विस्तारथी त्रण गणी झाझेरीपरिधिए
करीनेसहीत झालरनेआकारेछे. परिधिनाफरतावळी

उपर कह्या प्रमाणे साते नारकीमां सीमंत प्रतरथी अपइठाणप्रतरसुधीसर्वेमळीनेउंगणपचास प्रतरोछे. तेमां पहेला सीमंत नामना प्रतरने विषे सीमंत नामनोनरकावासो जेपीस्ताळीसलाख जोजननो छे तेनेफरतां चारदिशाए उंगणपचास उंगणपचास तथा चारविदिशाए अरुताळीसअरुताळीसनरकावासाछे तेश्रेणीबंधछे. तेमांथी तेनी नीचेना बीजा प्रतर वगेरे सर्वे प्रतरोमां दिशा तथा विदिशाएथइने आठआठ नरकावासा उंगाउंगा श्रेणीबंधछे. छेवटसर्वथीनीचला अपइठाणा नामनानरकावासानीचारदिशाए एकेको नरकावासोछे सर्व श्रेणीबंध नरकावासा नवहजार छसो त्रेपन अने पुप्पावकीर्णनरकवासा त्यासीलाख नेउंहजारत्रणसोसुडताळीसछे. ते बन्ने मळीने चोरासीलाखनरकावासाथया. तेमां पहेलो सीमंतो तथा छेल्लो अपइठाणो मुकीने बाकीना सर्वे नरकावासा संख्याता असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा उपर कह्यांप्रमाणेछे. तेनुं कांइक प्रमाण समजाववानेमाटे शास्त्रकारकहेछेके, कोइदेवनामणवारचपटीवगाडतां

शीतभूमीमां रहेलां नारकीउने अति शीत वेदना छे. जेम पीत्तज्वर (ताव) वाळो माणस आच्छादन वीना उनाळाना दिवसमां मध्यान काळे चारेबाजुए अग्निनीवचमां रहेलो होय अने त्यां तेनेजेटली उष्ण वेदना थाय, तेनाथी अनंतगुणी उष्णवेदना उष्ण भूमीना नरकावासामां रहेलानारकीउनेहोय छे, अने अतिदुर्बळवृध्द माणस कांइपणआछादनवीना शियाळानीरात्रे, उंचेथी बरफपडतोहोय, चारेबाजुथी शीतवायु वातोहोय, अने हीमाचळनाउंचाप्रदेशमां बरफ उपररहेलोहोयतो त्यां तेने जेटली शीतवेदना थाय, तेथी अनंतगुणी शीतवेदना शीतभूमीना नरकावासामांरहेलां नारकीउने होयछे. नरकावासाना क्षेत्रोनो वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श अति भयंकर, बिहामणो अने अति दुःखदायी छे.

दस भुवनपति निकायना भुवनो
पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार
जाडो छे, तेमांथी एक हजार जोजन उपर अने
हजार जोजन नीचे मुकीए वाकी एक लाख अठयो
तेर हजार जोजन पींड रह्यो ते ५ ८
जातिना भुवनपति निकायना देवोना भुवनोछे.
तना जे आठ रुचक प्रदेश छे, त्यांथी अर्धो अर्ध वे
करीए, एक दक्षिण दिशिनुं अर्ध अने वीजुं उत्त
दिशिनुं अर्ध, एवा वे भागे भुवनपतिना
श्रेणीउ छे, तेमां दक्षिण दिशानी श्रेणीमां
निकायना चोत्रीस लाख भुवन छे. नागकुमार
कायना चुंवालीसलाख, सुवर्णकुमार निकायना
त्रीसलाख, विद्युतकुमारनिकायनां चालीसलाख,
कुमार निकायनां चालीस लाख, द्वीपकुमार
नां चालीस लाख, उदधिकुमार निकायनां
लाख, दिशिकुमार निकायनां चालीसलाख,
कुमारनिकायनां पचासलाख, अने स्तनि
निकायनां चालीसलाख भुवनो छे, ए सर्व मळी

ख्याता जोजनवाळा

व्यंतरना भुवनो–रत्नप्रभा पृथ्वी

जे एक हजार जोजननो जाडो पृथ्वी पींड, एक सो जोजन उपर अने एक सो जोजन मुकीने वचलो आठसे जोजननो जाडो, जोजननोलांबो पहोळो व्यंतर देवोना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए भुवनो छे, ते नानामां नाना भरतक्षेत्र जेवडां, मध्यम महाविदेहक्षेत्रजेवडां अने मोटामां जंबुद्वीप जेवडा लाख जोजननां छे, ते सर्वे बहारथी वाटला, अंदरथी चोखुणां, अने कमलनी कर्णीकाने आकारे, अति सुंदर, सानुकुल, वर्ण, गंध, रस, अने ..... तेमां व्यंतरना देवो रहे छे. वली रत्नप्रभा उपर मुकेलो जे एकसोजोजननो जाडो पृथ्वी तेमांथी दश जोजन उपर अने दश जोजन मुकीने वचलो एंसी जोजननो जाडो, जोजननो लांबो पहोळो पृथ्वी पींड छे. तेमां

ज्ञातिनां वाणव्यंतर देवना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए असंख्याता भुवनो छे, ते नानामां नाना भरतक्षेत्र जेवडां, मध्यम महाविदेह जेवडां अने मोटामां मोटा जंबुद्वीप जेवडां लाख जोजननां छे. उपर कह्यां प्रमाणे व्यंतरना तथा वाणव्यंतरना असंख्याता भुवनो छे, तेमां सर्वे मळीने असंख्याता जीन भुवनो छे.

अनंतानंत आकाशप्रदेशनांमध्यभागमां. कटीए (केडये) हाथराखीपगपसारीउभेलापुरुषनांआकारे अकृत्रिम. निश्चळ. अने पंचास्तिकायनां समुदाययुक्त चौदराज प्रमाण लोक छे. ए चौदराजलोकना मध्यमां एकराज लांबो पहोळो अने मेरुसमीप नमनुतलाएर्ध्वांधो नवसें जोजन नीचो ने नवसें जोजनऊंचो तिर्छालोक छे. ते तिर्छालोकमां पचीस कोडाकोडी उद्धारपल्योपमना जेटला समयथाय तेटला द्वीप अने समुद्रो छे. अर्थात असंख्याता द्वीपने असंख्याता समुद्रो छे ते सर्वनी अन्यंतरमां लाख जोजननो लांबो पहोळो अने थाळीनाआकारे गोळ

आ प्रथम जंबुद्वीप छे; तेनां फरतो चुडीनाआकारे बे लाख जोजनना विस्तारे लवण समुद्र छे अने ते पछी धातकीखंड, कालोदधि समुद्र, पुष्करवरद्वीपने पुष्करवरसमुद्रविगेरे एक बीजाथी बमणां बमणां विस्तारे चुडीनाआकारे अने प्रशस्तवस्तुनां नामे असंख्याताद्वीपने असंख्यातासमुद्रो छे. सर्वथी छेल्लो स्वयंभुरमण नामेसमुद्र छे ते अर्धा राजलोक प्रमाण विस्तारे छे.

जंबुद्वीपमां बे चंद्र ने बे सूर्य, लवण समुद्रमां चार चंद्र ने चारसूर्य, धातकीखंडमां बारचंद्र ने बार सूर्य, कालो दधि समुद्रमां बहेतालीस चंद्र ने बहेतालीस सूर्य अने पुष्करार्धमां बहोंतेर चंद्र ने बहोंतेर सूर्य छे. ए बधां मळी एकसो बत्रीसचंद्रने एकसोबत्रीससूर्य तथा ग्रहादिक ज्योतिषीनां विमानो आ मनुष्य क्षेत्रमां छे, ते सर्वे चर छे. मनुष्य क्षेत्रनी बहार असंख्याता द्वीप तथा समुद्रोमां असंख्याता ज्योतिषीनां विमानो छे, ते सर्वे स्थिर छे. दरेक चंद्रने अठयासी ग्रह अठयावीस नक्षत्र अने

लांबा पहोळां ने अडतालीसजागनां उंचा छे, सूर्यनं
विमान एकसठीया अडतालीस भागनां लांबा प
होळां ने चोवीस भागनां उंचा छे, चंद्रनां बे गाउन
लांबा पहोळा ने एक गाउनां उंचा छे, नक्षत्रनां ए
गाउनां लांबा पहोळां ने अर्ध गाउनां उंचा छे, अ
ताराउनां पांचशेधनुष्यथी एक हजारधनुष्य सुधी
लांबा पहोळांने अर्ढीसेंथी पांचसें धनुष्य सुधी
उंचा छे. मनुष्य क्षेत्रना बहारनां ज्योतिषीनां विमा
नानु प्रमाण मनुष्य क्षेत्रना विमानोथी अर्धु अर्धु
एटले मनुष्य क्षेत्रमां रहेला चंद्रनु विमान एकस
ठीया छप्पन्न भागनुं छे; तो मनुष्य क्षेत्रनी बहार
चंद्रना विमान एकसठीया अठ्ठावीस भागनां छे
एम ए ज्योतिषीउनां विमानोनी लंबाइ, पहोळा
अने उंचाइनु प्रमाण अर्धु अर्धु छे चंद्र तथा सूर्यन
विमानवाहक देवो सोळ सोळ हजार छे, ग्रहनां
विमानवाहक देवो आठ हजार छे नक्षत्रना विमान
वाहक देवो चार हजार अने ताराना विमानवाहक
देवो बे बे हजार छे चंद्र सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने

तारानी चालवानी गति अनुक्रमे एक बीजाथी शीघ्र शीघ्रतर छे, ज्योतिषीओनां विमाननुं मांहोमांहे अंतर, व्याघाते उत्कृष्ट बारहजार बसें बहेंतालीस जोजननुं अने जघन्य बसेंछासठ जोजननुं छे, निर्व्याघाते (व्याघात न होय त्यारे) उत्कृष्ट बे गाउनुं अने जघन्यथी पांचसें धनुष्य एक ताराथी बीजा तारानी वच्चे अंतर छे. सूर्य उंचो सो जोजन तपे छे नीचो अढारसें जोजन तपे छे ने तिर्च्छो सुडतालीस हजार बसेंत्रेसठ जोजन अने साठीया एकवीस भाग तपे छे. एटले उपर कह्या प्रमाण सूर्यनुं ताप क्षेत्र छे.

लवण समुद्रे ज्योतिषीना विमानो छे ते उदक स्फटिक रत्ननां अने बीजा सर्व ज्योतिषीना विमानो स्फटिक रत्ननां छे. ते सर्व विमानो अर्ध कवीठा (कोठफळ) कार, मनोहर जाननुवने सहीत, देदी प्यमान प्रकाशवाळा अने अति सुंदर ज्योतिषीओनां विमानोछे तेमां असंख्याता ज्योतिषी देवो छे.

वैमानिक देवोनां विमानो:—ज्योतिषीनां विमानोथी असंख्यात कोडाकोडी जोजने अथवा दा

छमा राजलोकनां छेके, घनोदधिना आधार सौधर्मदेवलोक दक्षिण दिशाए अने देवलोक उत्तर दिशाए छे ते बन्ने मळी वळीयाकारे तेर प्रतर छे. तेरे प्रतरनी अर्धोअर्ध वेखंडकरीए; एक दक्षिण दिशिखंड अ बीजो उत्तर दिशिखंड, दक्षिण दिशि पति सौधर्मेंद्र अने उत्तरदिशिखंडनो अधिपति शानेंद्र छे. सौधर्मेंद्रना बत्रीसलाख विमान छे, चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसें छयासी चोखूणां, तर्सेसत्तावीस वाटलां अने एकत्रीस लाख हजारवसें त्राणुं विविध आकारनापुष्पावकीर्ण छे, तथा इशानेंद्रना अठ्ठावीसलाख विमान छे, चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसेंछयासीचोखूणां, अठत्रीस वाटलां अने सत्तावीस लाख सातसें व्यासी विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण छे; ते बंन्ने देवलोकना सर्व विमानना नीच पृथ्वीपींड बे हजार सातसें जोजननो जाडो छे ने विमानो पांचसें जोजननां उंचा छे, केटला एक

ज्योंपतळीयानो पृथ्वीपींड बे हजारछसेंजोजन
छे, ते विमानो छशें जोजन ऊंचा, १५
जोजनना ने केटलाएक असंख्याता
पहोळां अने काळा वर्ण सिवाय चार वर्णनां
त्रीजा, चोथा देवलोक उपर असंख्याता जोजने
पण दशमा राजलोकमां घनवातना आधारे
ब्रह्म देवलोक छे. ते देवलोकमां छ प्रतर
विमानो छे तेमां वळी चोरासी त्रिखूणां,
चोखूणां, वळी चुम्मोतेर वाटलां
हजार एकसो बामठ विविध
विमान छे. ते विमाननां ज्योंपतळीयानो
बे हजार पांचसें जोजन जाडो छे, ते विमानो
जोजनना ऊंचा, केटलाएक संख्याता अने
असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा अने
नीलावर्ण सिवाय त्रणवर्णनां छे. पांचमा
उपर असंख्याता जोजने ऊपरा
छेके घनोदधिने घनवातना आधारे लांतक
लोक छे. ते देवलोकमां पांच प्रतरने

वर्णना छे, सातमादेवलोकनांउपर असंख्याताजोजने अथवा अगियारमां राजलोकनां छेके घनोदधि अने घनवातना आधारे आठमो सहस्रार देवलोक छे. ते देवलोकमां चार प्रतरने छहजार विमानोछे, तेमां एकसोसोळ त्रिखूणां, एकसोआठ चोखूणां, एकसो आठ वाटलां अने पांचहजार छसेंअरूसठ विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमानछे. ते विमाननां जोय तळीयानो पृथ्वीपींड बेहजार चारसेंजोजन जाडोछे, ते विमानो आठसेंजोजननां उंचा केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने काळा, नीलाने रातावर्ण सिवाय बे वर्णनां छे. आठमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा बारमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवमो आणत अने दशमो प्राणत ए बे देवलोक जोडाजोडछे अने ते बन्ने देवलोकनोएकइंद्र छे. ते बन्ने देवलोकमां थइने चार प्रतरने चारसें विमानोछे. तेमां बाणुं त्रिखूणां, अठयासी चोखुणां, अठयासी वाटलां अने एकसोबत्रीसविविधआकारनां पुष्पावकीर्ण

विमानछे. ते विमानना ज्योतलीयानो पृथ्वीपींड बे हजार त्रणसें जोजन जाडोछे; ते विमानो नवसें जोजन ऊंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजनना लांबा पहोळा अने एक धोळा वर्णनांज छे. नवमा अने दशमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा बारमा राजलोकनां छेडे आकाशनां आधारे अगियारमो आरण अने बारमो अच्युत देवलोक जोडाजोड छे ते बन्ने देवलोकनो एक इंद्र छे. ते बन्ने देवलोकमां थइने चार प्रतरने त्रणसें विमानो छे, तेमां वट्टोतेर त्रिखूणां, अडसठ चोखूणां, चोसठ वाटलां अने छन्नु विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान छे. ते विमानना ज्योतलीयानो पृथ्वीपींड बे हजारत्रणसें जोजन जाडो छे, ते विमानो नवसें जोजनां ऊंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने एक धोळा वर्णनांज छे. अगियारमा अने बारमा देवलोकनां उपर असंख्यात जोजने अथवा तेरमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवग्रैवेयक छे

ते दरेकनो थकेको प्रतर होवाथी नवग्रैवेयकन
प्रतरो छे. ते नव प्रतरोमां प्रथम नीचेनी त्रीके
प्रतरे एकसो अगियार विमान छे, तेमां चाली
खुणां, त्रत्रीस चोखुणां अने पांत्रीस वाटलां,
छे. ए हेठली त्रीकमां पुष्पावकीर्ण विमान नथी
उपर असंख्यात जोजने बीजी मध्यनी त्रीके प
ने सात विमान छे तेमां अठावीस त्रिखुणां, च
चोखुणां, तेवीस वाटलां अने बत्रीस पुष्पावकी
मान छे तेना उपर असंख्यात जोजने अथवा तेर
जलोकने छेहे उपरनुं त्रीजुं त्रीक छे. तेनां एकसो
छे तेमां सोळ त्रिखूणां, बार चोखुणां, अगिया
टलां अने एकसठ पुष्पावकीर्ण विमान छे, एम
ग्रैवेयकनां सर्वे मळी त्रणसें अढार विमान छे.
ज्योतिषतळीयानो पृथ्वीपींड बे हजार वर्से जोजन
कोठे ते विमानो एक हजार जोजननां उंचा,
लाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता
ननां लांबा पहोळा अने एक धोळा वर्णनां छे.
. . उपर असंख्यात जोजने अथवा चौ

ष्यनी उपर बत्रीस आंगळमां सर्वे
रह्यां छे.

वार देवलोक, नवग्रैवेयक अने पांच
विमानना सर्वेमळीने चोरासीलाख सत्ताणुं हजार
त्रेवीस विमानो छे. ते विमानो अत्यंत सुगंधीमय,
खणना जेवो मृदुस्पर्श, नित्यउद्योतवंत,
जीनभुवनोए सहीत छे, तथा शब्द, रुप, गंध,
स्पर्श, ऋद्धि, गति, लावण्य, कान्ति, स्थिति, ए
ग्राना मनोज्ञ छे जेमां एवा अति सुंदर विमानो
विषे असंख्यात देवो रहे छे.

पृथ्वीकायादि एकेंद्रियनां–पांच दंडकवे इं
द्रादि विगलेंद्रियनां त्रण दंडक तिर्यंच पचेंद्रिय
एक दंडक अने मनुष्यनो एक दंडक एम दश दंड
भुवनो अनिश्चल अनित्य अने अनियमीत छे.

भुवनपति निकायमां सातक्रोडने बहोंतेर ला
जीनभुवन छे, वैमानिकमां चोरासीलाख सत्ताणुं
हजारने त्रेवीस जीन भुवन छे अने तिर्छालोकमां त्र
हजार बसें ओगणसाठ जीनभुवन छे. एम सर्वे म

आठकोरु सत्तावनलाख वर्से ने ब्यासी तथा व्यंतर निकाय अने ज्योतिषीमां असंख्याता जीनभुवनोछे. ते सर्वेशास्वता छे.

भुवनपति निकायनां दरेकजीनभुवनमां एकसो एंसी एंसी जीनप्रतिमाजी छे. नवग्रैवेयकना त्रणसें अढार अने पांच अनुत्तरनां पांच मळीने त्रणसें त्रेवीस जीनभुवनोमां एकसोवीस वीस जीनप्रतिमाजी अने बीजा सर्व वैमानिकनां जीनभुवनोमां एकसो एंसी एंसी जीनप्रतिमाजी छे. तिर्छा लोकनां मात्र जीनभुवनोमां एकसो चोवीस चोवीस अने बाकीना त्रण हजार एकसो नवाणुं जीनभुवनमां एकसोवीस वीस प्रतिमाजी छे. एम गणतां सर्वमळी पंदरअबज बेतालीस करोड अठावन लाख छत्रीस हजारने एंसी जीनप्रतिमाजी छे; तथा व्यंतर निकायमां अने ज्योतिषीमां असंख्यात जीनप्रतिमाजी छे.सर्व जीनप्रतिमाजी ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण ने वर्द्धमान ए च्यार नामनी अने सदा शास्वती छे. ॥ इति भुवनद्वार ॥

अथ त्रीजुं शरीरद्वार.

शरीर–"शीर्यते तच्छरीरं" प्रतिक्षणेपुद्गलने उपचयअपचयेकरीने वधे, घटे ते शरीर कहीए; शरीर पांच छे.१ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आहारक ४ तैजस, ५ कार्मण.

औदारिक–उदार–प्रधान तिर्थंकरगणधरादि पदवीनीअपेक्षाएसर्वशरीरोमां उत्तम, स्थुल पुद्गलो मनेळुं, उत्पत्तथयापछीतरतवधे, घटे, परिणमे अने छेदन भेदन ग्रहणादिथइशकेएवुं; औदारिकनाम कर्मनांउदयेऔदारिकशरीरयोग्य पुद्गलग्रहणकरीजीव पोताना प्रदेशसाथेमेळवी शरीरपणेनिपजावे ते औदारिकशरीरकहेवाय छे.

वैक्रिय–विविध प्रकारनी विक्रिया करे जेम नानानुंमोटुं–मोटानुंनानुं, सुरुपनुंकुरुप–कुरुपनुं सुरुप, दृश्यनुंअदृश्य–अदृश्यनुंदृश्य, एकनुं अनेक–अनेकनुं एक, अप्रतिघातीनुं प्रतिघाती–प्रतिघातीनुं अप्रतिघाती, भूचरनुंखेचर–खेचरनुं भूचर, इत्यादि घणा प्रकारनुं थइशकेएवुं वैक्रियनाम...

कार्मण—कर्मनोविकार, कर्ममय, कर्मस्वरुप सर्व शरीरोनुं बीज एवुं, खीरनीरनीपेठे जीव प्रदे शनीसाथे जे कर्मदळमळीरह्यांछे ते कार्मण शरीर कहेवाय छे.

औदारिकनी अपेक्षाए वैक्रियनां प्रदेश असंख्यातगुणा, वैक्रियनी अपेक्षाए आहारकनां प्रदेश असंख्यातगुणा, आहारकनी अपेक्षाए तैजसनां प्रदेश अनंतगुणा अने तैजसनी अपेक्षाए कार्मण शरीरनांप्रदेश अनंतगुणा छे, औदारिकथी वैक्रियनं अवगाहनां सूक्ष्म, वैक्रियथी आहारकनी अवगाहनां सूक्ष्म अने आहारकथी तैजमने तैजसथी पण कार्मणनी अवगाहनां सूक्ष्म छे. तैजस अने कार्मण शरीर अप्रतिघाति एटले कोइथी रोकाय नहि अथवा कोइनेरोकेनहिएवा, जीवने अनादिसंबंधवाळा छे.

नारकीनो एक दंडक, भुवनपतिना दशदंडक, ज्योतिषीनो एक दंडक, व्यंतरनो एक दंडक अने वैमानिकनो एक दंडक, ए चौद दंडके वैक्रिय, तैजस

कार्मण—कर्मनोविकार, कर्ममय, सर्व शरीरोनुं बीज एवुं, क्षीरनीरनीपेठे शनीसाथे जे कर्मदळमळीरह्यांछे ते कार्मण कहेवाय छे.

औदारिकनी अपेक्षाए वैक्रियनां प्रदेश ख्यातगुणा, वैक्रियनी अपेक्षाए आहारकनां प्रदेश असंख्यातगुणा, आहारकनी अपेक्षाए तैजसनां प्रदेश अनंतगुणा अने तैजसनी अपेक्षाए कार्मण शरीरनांप्रदेश अनंतगुणा छे, औदारिकथी वैक्रियनी अवगाहनां सूक्ष्म, वैक्रियथी आहारकनी अवगाहनां सूक्ष्म अने आहारकथी तैजसने तैजसथी पण कार्मणनी अवगाहनां सूक्ष्म छे. तैजस अने कार्मण शरीर अप्रतिघाति एटले कोइथी रोकाय नहि अथवा कोइनेरोकेनहिएवा, जीवने अनादिसंबंधवाळा छे.

नारकीनो एक दंडक, भुवनपतिना दशदंडक, ज्योतिषीनो एक दंडक, व्यंतरनो एक दंडक अने वैमानिकनो एक दंडक, ए चौद दंडके वैक्रिय, तैजस

अने कार्मण, एम त्रण शरीर होय छे. बे इंद्रिय, ते इंद्रिय, चौरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वनस्पतिकाय, ए सात दंडके, तथा समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय अने समुर्छिम मनुष्यने औदारिक तैजस ने कार्मण एम त्रण शरीर होय छे, वायुकाय अने गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडके औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, एम चार शरीर होय अने गर्भज मनुष्यना दंडके पांचे शरीर होय छे.

॥ इति शरीरद्वार ॥

अथ अवगाहना द्वार.

अवगाहना-शरीरनुं प्रमाण-जघन्य तथा उत्कृष्ट चोवीश दंडके कहे छे.

प्रथम नारकीना दंडके सामान्यपणे अवगाहना जघन्य अंगुलनां असंख्यातमां भाग जेटली अने उत्कृष्ट पांचसें धनुष्यनी छे, जुदी जुदी नारकीनी अपेक्षाए पहेली नारकीनी पोणाआठ धनुष्य छ अंगुल, बीजी नारकीनी साडापंन्नर धनुष्य बार अंगुल त्रीजी नारकीनी सवाएकत्रिस धनुष्य, चोथी नारकीनी

देहमान पांचसें धनुष्यनुं जाणवुं; ए प्रमाणे साते नारकीमां दरेक प्रतरोना नारकीनुं नव
मान कह्युं; अने ते नारकीना जीवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्यथी अंगुलना संख्यातमां नाग
अने उत्कृष्टथी पोताना नव प्रत्यिक शरीरथी बमणुं करी शके छे.

जुवनपतिना दशदंरूक, व्यंतरनो एक दंरूक अने ज्योतिषीनो एक दंरूक एम बार दंरूके देवदेवीनुं नव प्रत्यिक शरीर एटले स्वानाविक शरीर जघन्य अंगुळना असंख्यातमां नाग जेटलुंने उत्कृष्ट सात हाथनुं होय छे. अने ते देवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलना संख्यातमां नाग जेटलुंने उत्कृष्ट लाखजोजनपर्यंत करी शके छे, जघन्य शरीर उत्पत्ती समयेज होय छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय वाउकाय अने साधारण वनस्पतिकायना जीवोनुं शरीर जघन्य अने उत्कृष्टथी अंगुळना असंख्यातमा नाग जेटलुं होय छे. प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीर जघन्यथी अंगुळना असंख्या-

तमा ज्ञाग जेटलुंने उत्कृष्टथी हजार जोजनथी का-
फेरुं जाणवुं.

सूक्ष्म ने साधारण नाम कर्मना उदये करीने अनंता जीवोए ग्रहण करेलुं एक शरीर ते सूक्ष्म नि-गोद (सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय)नुं शरीर कहे-वाय ए शरीर, सर्वजीवोना शरीरथी अतिसूक्ष्म अं-गुलना असंख्यातमा ज्ञाग जेटलुं ठे. सूक्ष्म निगो-दिआना शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं सूक्ष्म वाउ-कायनु शरीर जाणवुं. एटले असंख्याता सूक्ष्मनि-गोदना शरीरे एक सूक्ष्म वाउकायनुं शरीर होय ठे. सूक्ष्म वायुकायना शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं सूक्ष्म तेउकायनुं, तेथी असंख्यातगणुं मोटुं सूक्ष्म अपकायनुं अने तेथी असंख्यातगणुं मोटुं सूक्ष्म पृ-थ्वीकायनुं शरीर कह्युं ठे. हवे सूक्ष्म पृथ्वीकायना एक शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं एक बादर वाउ-कायनुं, तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर अग्नी-कायनुं, तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर अप-कायनुं तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर पृथ्वी-

कायनुं अने तेथी पण असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर निगोद (साधारण वनस्पति काय)नुं शरीर कह्युं छे. ए प्रमाणे पांच सूक्ष्मने पांच बादर ए दशेना शरीर मांहोमांहे एक बीजायी अनुक्रमे असंख्यात गुणा मोटा मोटा कह्या छे, परंतु दशेना शरीरोमांहेनुं मोटामां मोटुं शरीर पण अंगुलना असंख्यातमां भाग जेटलुंज जाणवुं कारण के अंगुलना असंख्यातमां भागना पण असंख्यात भेद कह्या छे.

पृथ्वीकायादिक पांचे सूक्ष्म एकेंद्रिय जीवोना शरीर एवां सूक्ष्मछेके, एक शरीरतो देखायज नहि पण असंख्याता के अनंता सूक्ष्म जीवोना शरीरोने पींड एकठो होय तो पण ते देखाता नथी अने प्रत्येक वनस्पति काय सिवाय पृथ्वीकायादि पांचे बादर एकेंद्रिय जीवोना शरीर पण एवा झीणा छे के ते असंख्याता जीवोना शरीरनां पींड एकठां होयतोज देखाय छे तेने माटे शास्त्रज्ञो कहेछे के एक पत्थर के मीणाना ककडाने कोइ अतिबळवान पुरुष घणो वखत वाटी वाटीने झीणो भुको करे तोपण तेमां

रहेलां केटलाएक जीवशरीरोने कीडामणा थाय अने केटलाएक जीवशरीरने कीडामणा पण न थाय, केटलाएक मरे ने केटलाएक मरे पण नहि अने केटलाएकने तो मालम पण पडे नहि. जेमके—बार जोजननी लांबीने नव जोजननी पहोळी नगरीने विषे घणा लोको वसे छे. तेमां कोइना घेर चोर धाडपाडे, लुंटे के मारे, तेनी खबर नगरीना लोकमां कोइने पडे ने कोइने न पडे. तेम अहीं पण जाणी लेवुं.

शंख विगेर बेइंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण बारजोजननुं. कानखजुरा विगेरे तेइंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण त्रणगाउनुं अने भमरा विगेर चौरिंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण चार गाउनुं कह्युं छे. बेइंद्रिय. तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय जीवोनुं जघन्य शरीरप्रमाण अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं जाणवुं.

गर्भजजलचर तथा उरपरिसर्पनी उत्कृष्ट अवगाहना एकहजारजोजननी. गर्भज भुजपरिसर्पनी पृथक्त्व (बेथी नव) गाउनी, गर्भज चोपगा (गाय

(चेर) थी अ गाउनी अने गर्भज खेचरीओनी पृथक्त्व धनुषनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. समुर्छिम जलचरनी उत्कृष्ट अवगाहना हजार जोजननी, समुर्छिम उरपरिसर्पनी पृथक्त्व जोजननी, समुर्छिम थलचरनी पृथक्त्व गाउनी अने समुर्छिम भुजपरिसर्प तथा समुर्छिम खेचरीओनी पृथक्त्व धनुष्यनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. तिर्यंच पंचेंद्रिय कोइ जीव लब्धियोगे वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट नवसें जोजन सुधी करी शके छे.

समुर्छिम मनुष्योनुं उत्कृष्ट अने जघन्य देहमान अंगुलना असंख्यातमा भागनुं कह्युं छे. गर्भज मनुष्यनुं जघन्य देहमान अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुंने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं कह्युं छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए पांच देवकुरुने पांच उत्तर कुरुक्षेत्रना मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान त्रण गाउनुं, पांच हरिवर्षने पांच रम्यकक्षेत्रना मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान बे गाउनुं, पांच हेमवंतने पांच ऐरण्यवतक्षेत्रना मनुष्योनुं उत्कृष्ट

देवोनुं ७ हाथनुं, पांचमाने छठ्ठा देवलोके पाच हाथनुं, सातमाने आठमा देवलोके चार हाथनुं, नवमा, दशमा, अगियारमा ने बारमा देवलोके त्रण हाथनुं नवग्रैवेयके बे हाथनुं अने अनुत्तर विमाने एक हाथनुं उत्कृष्ट देहमान कह्युं छे.

असुर कुमार निकायना देवोना शरीर स्याम, वायु कुमारना नीला, सुवर्ण कुमार, दिग्किुमार, ने स्तनितकुमारना सुवर्ण जेवा पीळां, अग्निकुमार, विद्युतकुमार,ने द्वीपकुमारना राता, अने नागकुमार तथा उदधिकुमारना गौर वर्णवाळां शरीर कह्यां छे. पिशाच, भूत, यक्ष, महोरग अने गंधर्व निकायना देवोना शरीरस्याम, किन्नरना नीला, अने राक्षस तथा किंपुरुषना गौर(धोला) वर्णवाळां शरीर कह्या छे. ज्योतिष देवो मांहे ताराउना शरीर पंचवर्णा अने बीजा सर्वेना तपावेला सुवर्ण सरखा वर्णवाळां शरीर कह्या छे. सौधर्म अने इशान देवलोकना देवना शरीर राता सुवर्ण सरखा कान्तिवाळा, सनत्कुमार, माहेंद्र, अने ब्रह्मदेवलोकना देवोना शरीर कमळनी केसराना स;

नुष्यनुं, मल्लिनाथनुं २५ धनुष्यनुं, मुनिसुव्रतस्वामिनुं २० धनुष्यनुं, नमिनाथनुं १५ धनुष्यनुं, नेमिनाथनुं १० धनुष्यनुं, पार्श्वनाथनुं ए हाथनुं अने वर्द्धमान स्वामिनुं ७ हाथनुं देहमान जाणवुं.

॥ इति अवगाहनाद्वार ॥

अथ पांचमुं लेश्याद्वार.

जेणे करी जीव कर्म साथे आश्लेश पामे तेने लेश्या कहीए. ते लेश्याना बे भेद छे, एक द्रव्यलेश्या तथा बीजी भावलेश्या, त्यां आत्माने काळा तथा पीळादिक द्रव्यरुप कर्मपुद्गळ संयोग ते द्रव्य लेश्या अने तेथी आत्माना शुभाशुभ परिणाम ते भावलेश्या अर्थात छ लेश्यानी कोइ एवी जातनी अनंती वर्गणा छे के जेमाथी आत्मानी योग प्रवृत्ति (मन वचन कायनो व्यापार) ना अनुसारे लेश्यानी वर्गणा ग्रहण कराय ते द्रव्य लेश्या, अने तेथी जीव उपर थती असर ते भाव लेश्या जाणवी.

अशुभ लेश्याथी थती अशुभ असर, आत्माना स्वाभाविक शुभ अध्यवशाय उपर थती नथी, त्यां

लक्षणजाणवुं. आर्त रौद्र ध्यान वर्जी धर्म शुक्ल ध्यान ध्यावे, प्रशांत चित्त, आत्म रमणता, पांच समिति समित, त्रण गुप्तिए गुप्त, सरागी तथा वितरागीउ पशांत चित्त अने जीतेंद्रिय विगेरे व्यापारे सहित जीवनापरिणाम ते शुक्ल लेश्यानुं लक्षण जाणवुं.

वर्ण–स्निग्ध मेघनीघटासरखो, भेंसना शिंगडानीगोळी, अंजण, खंजण, अरिष्टरत्न, नेत्रनी कीकी अने काळा सुरमाथी अनंत गुणो कृष्ण लेश्यानो वर्ण महा भयंकर जाणवो. अशोक वृक्षना अंकुर नीलचाशपक्षी अने वैडुर्यरत्नथी अनंत गुणो नील लेश्यानोवर्ण जाणवो, अळशीनाफुल, कोकीलानी पांख अने पारेवानाकंठना वर्णथी अनंतगुणो कापोत लेश्यानोवर्ण जाणवो. हिंगळोक, उगतो सूर्य, दिपकनी शीखा, पोपटनीचांच अने तपावेला लाल सोनानावर्णथी अनंतगुणो तेजो लेश्यानो वर्ण जाणवो हरियाळनो मध्यवर्ण, हळदर अने सेणानाफूलना वर्णथी अनंतगुणो पद्मलेश्यानो वर्णजाणवो. शंख, मचकुंदनाफुल, दूध, पूर्णचंद्रमा, मोतीनो हार अने



तेथी एकसमयअधिक पद्मलेश्यानी जघन्यस्थिति
अने उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमअधिक अंतरमु
र्तनीजाणवी, जेटली पद्मलेश्यानी उत्कृष्टीस्थितिक
छे तेथी एक समयअधिक शुक्ललेश्यानीजघन्य स्थि
छे अने उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीससागरोपम उपर अं
मुर्हुर्तनीजाणवी.

जेम लोटामां, नाना घडामां अने मोटाघ
मांथी पाणीभरेलुंहोय तेमां ते दरेकमां असंख्य
ता जीवछे अने ते एकबीजानीअपेक्षाए थो
भाझा जीवकहेवाय छे, तेम कृष्ण, नील अने क
पोत लेश्यानी उपर कह्या प्रमाणे पल्योपमनाअस
ख्यातमांभागनीउत्कृष्टी स्थितिकहीछे ते दरेक ए
बीजाथी अधिक अधिकतर जाणवी केमके अस
ख्यातानाअसंख्यातामेदछे एम सर्वत्रजाणवुं.

चोवीश दंडके लेश्या.

नरक गतिमां कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण
लेश्या होय छे, तेमां पहेलीअनेबीजीनरके एक

यंत्र.

चोवीस दंडके	छ लेश्याना नाम.						
लेश्याद्वार	१ कृष्ण.	२ नील.	३ कापोत.	४ तेजो.	५ पद्म.	६ शुक्ल.	७ [illegible]
नारकी १	१	१	१	०	०	०	३
दश भुवनपति १०	१	१	१	१	०	०	४
पृथ्वीकाय १	१	१	१	१	०	०	४
अपकाय १	१	१	१	१	०	०	४
तेउकाय १	१	१	१	०	०	०	३
वाउकाय १	१	१	१	०	०	०	३
वनस्पतिकाय १	१	१	१	१	०	०	४
विगलेंद्रिय ३	१	१	१	०	०	०	३
गर्भजतिर्यंच १	१	१	१	१	१	१	६
गर्भजमनुष्य १	१	१	१	१	१	१	६
व्यंतर १	१	१	१	१	०	०	४
ज्योतिष १	०	०	०	१	०	०	१
वैमानिक १	०	०	०	१	१	१	३

॥ एवं लेश्या द्वार ॥

अथ छठुं इंद्रियद्वार.

इंद्रिय–इंद्र एटले परमैश्वर्यवान् आत्मा तेनुं न्ह अथवाजीवेरचेल, सेवेल अने जीवाधिन ते ड्रियजाणवी. ते इंद्रियोपांचछे, १ स्पर्शेंद्रिय चामडी), २ रसेंद्रिय (जीभ), ३ घ्राणेंद्रिय, (नाक), चक्षुरिंद्रिय (नेत्र) अने ५ श्रोतेंद्रिय (कान), तेकइंद्रियो बेप्रकारेछे, एक द्रव्येंद्रिय अने बीजी भावेंद्रिय.

द्रव्येंद्रिय ते निर्माणनामकर्म अने अंगोपांग नामकर्मनाउदयथी प्राप्तथायछे: तेनां बेभेदछे, १ निर्वृत्तिद्रव्येंद्रिय अने २ उपकरण द्रव्येंद्रिय. निर्वृत्ति द्रव्येंद्रियना बाह्य अने अभ्यंतर आकार छे. तेमां बाह्याकार जातिनी अपेक्षाए घणां प्रकारनां छे. जेमकेः–मनुष्यनांकान मुदरनेभ्रनीबंनेबाजुएछे. अश्व-नांकान उपलाभागमांनेअणीदारछे अने हाथीनां कान मोटाविशाळनेपिंछडा (पंखा) ना आकारेछे अथवा घोडानां नाकचपटां. कागडाना अणीदारछेएवे एवीरीते पांचेइंद्रियोनां बाह्याकार घणांप्रकारनां छे

अनेअभ्यंतर आकारमां स्पर्शेंद्रियनोआकार घणां प्रकारनो एटले पोतपोतानां शरीरसरखो, रसेंद्रियनोखुरपा (अस्त्रा) सरखो, घ्राणेंद्रियनो अतिमुक्तकपुष्पसरखो, चक्षुरिंद्रियनो मसुरनीदाळसरखोअने श्रोतेंद्रियनो कदंब वृक्षनां फुलसरखोआकारछे, ए प्रमाणे निर्वृत्ति अने स्वविषयग्रहणकरवानीशक्तिरुप उपकरणद्रव्येंद्रिय जाणवी.

भावेंद्रिय–मतिज्ञानावर्णादिकर्मोनां क्षयोपशमप्रमाणे स्वविषयजाणवानी के समजवानी शक्ति ते भावेंद्रिय, तेनां बेभेदछे. एकलब्धिभावेंद्रिय अनेबीजी उपयोगभावेंद्रिय, लब्धि भावेंद्रिय–जाति अने गत्यादिकर्मोथी अने जातिगत्यादिनेआवरणकरवावाळाएवा कर्मनां क्षयोपशमथी जे शक्ति उत्पन्नथायते लब्धिभावेंद्रिय कहेवाय छे. उपयोग भावेंद्रिय–इंद्रियोने पोतपोतानांविषयोमांसावधानता. एटले जेज्ञाननोव्यापारने उपयोग भावेंद्रिय कहीये.

स्पर्शेंद्रियनो विषय उनो, टाडो, भारे, हळवो, स्निग्ध, रुक्ष, मृदु अने वरसट छे, रसेंद्रियनो विषय

॥ एवं इंद्रियद्वार ॥

अथ सातमुं समुद्घात द्वार.

समुदघात–सम–एकीन्नाव, उत्–प्रबळ
घात क्षय एकीन्नाववमेकरी घणांजकर्मनोक्षयजेने
अंदर तेनुंनाम समुद्घात अथवा वेदनादिना प्र
बल्यतावमेकरी एकीन्नावना योगे घणांज कर्मक्ष
वे जेक्रियान्नोअंदर तेनुंनाम समुद्घात, ते स
द्घातसातवे. १ वेदनासमुद्घात, २ कषाय स
द्घात, ३ मरणसमुद्घात, ४ वैक्रियसमुद्घात,
तैजससमुद्घात, ६ आहारकसमुद्घात अने ७ के
वलीसमुद्घात.

वेदना समुद्घान–अत्यंत वेदनाउत्पन्नथव
थी तेनीअंदरआत्मानुं तन्मयपणुंथइजवुं अने तेम
घणांजकर्मनोक्षयथवो तेनुंनाम वेदनासमुद्घात
ज्यारेजीवने अत्यंतवेदनाथायवे त्यारे पोतानाआत्म
प्रदेशोवहारनीकळे, ते नीकळेला आत्मप्रदेशथी पो
लाणनोन्नाग पुरीदेने लांबाकाळे न्नोगववालायककर्मने
उदीरणाकरणवमेखेंची वर्तमानकाळेन्नोगवीले, जोके

आठमेसमये दंरुसंहरे ठे, केवळीसमुद्घातवरे घणां
कर्मनो क्षयकरे ठे.

नारकी अने वाउकायना दंरुके वेदनी, कषाय, मरण, अने वैक्रिय ए चार समुद्घात होयठे, पृथ्वी काय, अप्पकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय, बेइंडिय, तेइंडिय अने चौरिंडिय ए सातदंरुके, एक वेदना बीजी कषाय अने त्रीजी मरण समूद्घात ठे. दश भुवनपतिना दशदंरुक, व्यंतरनो एकदंरुक, ज्योतिषीनो एकदंरुक, वैमानिकनो एकदंरुकने गर्नजतिर्यंचनो एकदंरुक एम चौद दंरुके, वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस एम पांच समुद्घात होयठे अने गर्नज मनुष्यना दंरुके वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, आहारक, तेजस अने केवळी एम साते समुद्घात कही ठे.

॥ इति समुद्घातं द्वार ॥

अथ आठमुं संघयण द्वार.

संघयण–सहनन एटले हाकना संधि विशेप प्राप्त थाय ठे शरीरावस्थाना अवयवो जेणे करीने ते

गर्भज-मनुष्य तथा गर्भज तिर्यंचना दंडके छए संघयण होय. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय ए त्रण दंडकने विषे एक सेवार्त्त संघयण होय अने नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीने वैमानिक ए चौद दंडक तथा पांच एकेंद्रियना पांच दंडकमळी ओगणीश दंडकना जीव छए संघयणरहीत एटले असंघयणी कह्या छे, कारणके ए ओगणीशदंडकना जीवने हाड मांस होय नहि अने हाड मांस विना संघयण होतु नथी. केटलाएक आचार्यो तिर्यंच पंचेंद्रिय संमूर्छिम अने मनुष्य संमूर्छिमने छए संघयण पांचे एकेंद्रियने सेवार्त्त संघयण अने तेरदेवताना दंडके वज्ररुषभ नाराच संघयण कहेछे पण ते कथन औपचारीक जाणवुं. तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बळदेव, वासुदेव, तद्भव मोक्षगामी मनुष्य अने असंख्यात वरसना आयुषवाळा तिर्यंच तथा मनुष्योने पहेलुंज संघयण कह्युं छे.

॥ इति संघयणद्वार ॥

मनुष्य तथा बारमा देवलोक सुधीना देवो उत्तरवै
क्रियशरीरकरेतो ते घणां प्रकारनां संस्थाने(आकारे)
करी शके छे. नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमान
वासीदेवोने उत्तरवैक्रियशरीरकरवानीशक्ति छे पण तेवा
शरीरनुं तेमनेप्रयोजननहिहोवाथी कदीए उत्तरवैक्रि
शरीरकरतांनथी. नारकीउत्तरवैक्रिय शरीर करे तो
पण शरीरहुंमक संस्थानेज जाणवुं.

॥ इति संस्थान द्वार ॥

अथ दशमुं प्राणद्वार.

प्राणने धारण करे ते प्राणी–जीव कहेवाय
प्राण बेप्रकारे छे एकद्रव्यप्राण अने बीजुं भावप्राण
तेमां शरीर संबंधीभवोपग्राही आत्मसंबंध ते द्रव्यप्रा
अने आत्मानाज्ञानादिगुणते भावप्राण जाणवां. स
र्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रियने
तथा मनबल, वचनबल, ने कायबल अने
तथा श्वासोश्वास ए दश द्रव्यप्राण जाणवां,
दर्शन, चारित्र अने वीर्य एचार भावप्राण कह्यां छे
पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय

क्रियशरीरवाळो एक शरीरपर्याप्ति. अंतर मुहुर्तमां अने वाकीनीपांचेपर्याप्तिउं एक एक समयमां अनुक्रमे एकपठी एकपुरीकरेठे.

आहार, शरीर अने इंद्रिय पर्याप्ति पुरी कर्या सिवाय कोइ जीव मरण पामे नहि. स्वयोग्य सर्व पर्याप्तिपुरीकरे तेने पर्याप्तो अने स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरीनथी त्यांसुधीतेने अपर्याप्तो कहेवायठे. पर्याप्तिमां बे ज्ञेद ठे, एक लब्धिपर्याप्तिने बीजी करण पर्याप्ति स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे ते लब्धिपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्व पर्याप्तिपुरीकरी लीधी ठे तेने करणपर्याप्ति कहेठे. अपर्याप्ति पण बे प्रकारना एक लब्धि अपर्याप्ति ने बीजी करण अपर्याप्ति. स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरशजनहि तेने लब्धिअपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्व पर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे तेने करण अपर्याप्ति कहेवाय ठे.

पर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धिपर्याप्ति अने अपर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धि अपर्याप्ति प्राप्त थाय ठे, पण करणपर्याप्ति अने करण

अपर्याप्ति नाम मात्रछे, एकमेना उदयथी थतीनथी; जेम देवतापर्याप्तिपुरीकरेज पणज्यांसुधी पुरीकरी नथी त्यां सुधी तेनुं कांइक नाम आपवुं जोइए माटे तेने करण अपर्याप्ति कहेछे; अने सर्वे पर्याप्तिउ पुरीकरी लीधीछे एम जणाववानेमाटे तेने करण पर्याप्ति कहेछे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने वनस्पतिकाए एकेंडिय जीवोने आहार,शरीर, इंडिय अने श्वासोश्वास एम चार पर्याप्तिउ कही छे. बेइं-डिय, तेइंडिय अने चौरिंडिय तथा असंज्ञी पंचेंडियने उपरनी चार पर्याप्ति साथे जापा पर्याप्तिसहित पांच पर्याप्ति कही छे. नारकी, दशज्ञुवनपति, व्यंतर, ज्यो-तिषी अने वैमानिक तथा गर्जजतिर्यंच पंचेंडियअने मनुष्य ए सर्वे संज्ञी पंचेंडियने उपर कहेली पांच-पर्याप्तिसाथे मनपर्याप्तिसहित उए पर्याप्ति होयछे.

॥ इतिपर्याप्तिद्वार ॥

अथ बारमुं योनीद्वार.

योनी—उत्पत्ति स्थानक—सामान्ये जेजे जीवना उत्पत्ति स्थानक वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शे करी सरखां

होय, ते सर्वे एकजाती योनीमांहे गणीए, जन
वरना गणमांहे जुदा जुदा कीडा, कमीआ,
विगेरे घणां जीव उपजे छे, ते सर्वना
कुळ छे, पण योनी तो एकज गणाय, एवी रीते गणता
सर्व संसारी जीवोनी चोराशी लाख योनी छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकायनी
लाख अने साधारण वनस्पतिकायनी चौदलाख तथा
प्रत्येक वनस्पतिकायनी दशलाख योनी कही छे.
इंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रियनी बब्बे लाख, गर्भज
तिर्यचपंचेंद्रियनीचारलाख, नारकीनी चारलाख
चारनिकायनादेवतानी चारलाख अने मनुष्यनी
लाख एम सर्वेमळी संसारीजीवोनी चोराशी
योनीकहीछे अने सिध्धना जीवोन शरीर नहि होवाथी
योनी पण नथी.

देवता तथा नारकीनी अचित्त योनी होयछे,
गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा गर्भज मनुष्यनी कांइक
सचित्तने कांइक अचित्तरुप मिश्र योनीछे अने एके
द्रिय तथा विगलेंद्रियनीमांहे कोइकनी सचित्त, कोई

सर्व ज्ञानावरणी कर्मनोदय थवाथी, आवरणरूप उ
पाधी रहीत, केवळज्ञान सर्वथा एकज प्रकारनुं छे
अने वाकीना चारे ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयो
पशम प्रमाणे होवाथी घणां प्रकारनां छे. मतिज्ञान
ने श्रुतज्ञान परोक्ष छे अने अवधिज्ञान, मनः पर्यव
ज्ञान तथा केवळज्ञान प्रत्यक्ष कह्यां छे.

दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक
ए देवताना तेर दंडके तथा नारकी अने गर्भज ति
र्यंचपंचेंद्रियना दंडके सम्यकदृष्टि जीवने मतिज्ञान
श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान एम त्रण ज्ञान होय छे
बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, अने चौरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रि
यना दंडके अपर्याप्तावस्थाए केटलाएक जीवोने म
तिज्ञान अने श्रुतज्ञान एम बे ज्ञान सिद्धांतने वि
कह्यां छे. गर्भज मनुष्यना दंडके पांचे ज्ञान कह्यां
पांच एकेंद्रियना दंडके एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं हो
वाथी ते जीवोने ज्ञान होतुं नथी. सिद्धना जीवोने
केवळज्ञान होय छे.

॥ इति ज्ञान द्वार ॥

अथ पंदरमुं अज्ञानद्वार.

अज्ञान—अनंत धर्मात्मक वस्तुने सो दर्शीवाने
नयी एकरूप पुर्गलोजाणे. संसार हेतु भेने
हेतु जाणे, एकांते ग्रहण करवारूप अथवा त्याग
रूप एम एकांतेज वस्तु स्वरूप माने पण उभय
जाणे, माटे मिथ्यात्वना उदय करीने मिथ्या-
ज्ञानपणुं ने अज्ञाणरूपज दोष तेनुं नाम अ-
ज्ञानु छे. १ मतिअज्ञान, २ श्रुतअज्ञान, ३ वि-
भंग एम त्रण प्रकारनां अज्ञान कह्यां छे.
तेर देवताना दंडक एक गर्भज मनुष्यनो तथा
गर्भज तिर्यंचनो अने एक नारकीनो दंडक एम
सोळदंडकने विषे त्रण अज्ञान होय अने
तथा त्रण विगलेंद्रियना दंडक एम

सर्व ज्ञानावरणी कर्मनोक्षय थवाथी, आवरणरुप उ-
पाधी रहीत, केवळज्ञान सर्वथा एकज प्रकारनुं छे
अने बाकीना चारे ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयो
पशम प्रमाणे होवाथी घणां प्रकारनां छे. मतिज्ञान
ने श्रुतज्ञान परोक्ष छे अने अवधिज्ञान, मनः पर्यव-
ज्ञान तथा केवळज्ञान प्रत्यक्ष कह्यां छे.

दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक
ए देवताना तेर दंडके तथा नारकी अने गर्भज ति-
र्यंचपंचेंद्रियना दंडके सम्यकद्दष्टि जीवने मतिज्ञान,
श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान एम त्रण ज्ञान होय छे,
बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, अने चोरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रि-
यना दंडके अपर्याप्तावस्थाए केटलाएक जीवोने म-
[illegible]न एम बे ज्ञान सिद्धांतने विषे
[illegible] दंडके पांचे ज्ञान कह्याछे.
[illegible] ५ मिथ्यात्व गुणठाणुं हो-
[illegible] होतुं नथी. सिद्धना जीवोने

[illegible] ज्ञान द्वार ॥

नो जे अवबोध तेनुंनाम दर्शन १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवळदर्शन एम चार प्रकारे दर्शन छे.

चक्षुदर्शन–घटादि पदार्थोने आंखोवडे सामान्य पणे देखवुं ते. अचक्षुदर्शन एटले चक्षु सिवाय बाकीनी इंद्रियो जे स्पर्शन, रसन, घ्राणन, श्रोतन अने नोइंद्रिय जे मन एणे करी शब्दादिक अर्थनो जे सामान्यावबोध थाय ते अचक्षुदर्शन, द्रव्य, क्षेत्र, काळने भाव ए चार मर्यादा मांहे रह्यां जे रुपी द्रव्य तेनो सामान्यावबोध ते त्रीजुं अवधिदर्शन, सर्वद्रव्यनो सामान्यावबोध ते निरावरण अप्रतिपातीएवुं चोथुं केवळ दर्शन जाणवुं. ए चार दर्शन अनाकार छे, कारणके जाति, गुण, क्रियादिक विशेषण रहित तथा वस्तुना आकार रहित केवळ आकांक्षछे एवुं देखीए तेनुं नाम दर्शन कह्युं छे.

पृथ्वीकायादि पांच एकेंद्रियना पांच दंडक, बेइंद्रियनो एकदंडकअने तेइंद्रियनो एक दंडक एम दंडकने विषे एक अचक्षु दर्शन होय, चौरिंद्रि-

यनादंमके चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शनकह्युं छे. तेर देवताना दंमक, एक नारकीनो दंमक अने एक तिर्यच पंचेंडियनो दंमक एम पंदर दंमकने विषे चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन एम त्रण दर्शन होय अने मनुष्यना दंमके केवळदर्शन सहीत चारे दर्शन होय छे. सिद्धना जीवोने एक केवळदर्शन होय छे.

॥ इति दर्शन द्वार ॥

अथ सत्तरमुं दृष्टि द्वार.

दृष्टि–जे अवलोकनकरवुं तेने दृष्टिकहीए. ते दृष्टि त्रण प्रकारे छे. १ सम्यग् दृष्टि, २ मिथ्यात्वदृष्टि अने ३ मिश्रदृष्टि तेमां थी वितरागे कहेलां वस्तुतत्वनुं ज्ञानथाय ते प्रथम सम्यग् दृष्टिजाणवी. सम्यग्दृष्टिनां लक्षणथी जे विपरीत ते बीजी मिथ्यात्वदृष्टि तथा सारुं अथवा मातुं ज्ञान बेहुने विषे जे खरापणानुं थाय ते त्रीजी मिश्रदृष्टि जाणवी.

पृथ्वीकायादिकपांच एकेंद्रियनादंमके एक मिथ्यात्वदृष्टिछे. विगलेंद्रियनात्रणदंमके एक मिथ्या-

त्वदृष्टि अने बीजी सम्यक्त्वदृष्टि एम बे दृष्टि कहीछे कारणके जे जीव परभवथी सास्वादन सम्यक्त्व सहीत आवे छे तेने अपर्याप्तावस्थाए सम्यक्त्व दृष्टि होय छे ते अपेक्षाए विगलेंद्रियना दंडके बे दृष्टि जाणवी, तेर देवताना दंडके गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचना दंडके तथा नारकीना दंडके एम सोळ दंडके त्रण दृष्टि कही छे. पण एमां नव ग्रैवेयके एक सम्यक्त्व अने बीजी मिथ्यात्व ए बे दृष्टि लाभे तथा पांच अनुत्तर विमाने एक सम्यक्त्व दृष्टिज लाभे तथा समुर्च्छिम तिर्यंचने समयक्त्व अने मिथ्यात्व ए बे दृष्टिज लाभे अने समुर्छिम मनुष्यने एक मिथ्यात्व दृष्टि कही छे.

॥ इति दृष्टि द्वार ॥

अथ अढारमुं योगद्वार.

योग—युक्तथवुं तेने योगकहीए अथवा जीवना बलवीर्य, शक्ति, पराक्रमने योग कहीए, अथवा योग एटले व्यापार तेयोग त्रणप्रकारनोछे मन १ योग २ वचन योग अने ३ काययोग.

चौद दंमके मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रिय-
काययोग, वेक्रियमिश्रकाययोग अने कार्मणकाय-
योग ए त्रण योग कायाना मळीने अगियार योग
कह्यां छे. तिर्यचना दंडके एक आहारककाययोग
अने बीजो आहारक मिश्रकाययोग वर्जीने बाकीना
तेर योग कह्यां छे, गर्नजमनुष्यना दंमकनेविषे
पंदर योग होय छे. बेइंडिय, तेइंडिय अने चौ-
रिंडियना दंमके एक औदारिककाययोग, बीजो औ-
दारिक मिश्रकाययोग, त्रीजो कार्मणकाययोग अने
चोथो असत्यामृषावचनयोग एम चार योगकह्यां छे.
वाउकायना एकदंमकनेविषे एक औदारिककाययोग,
बीजो औदारीकमिश्र काययोग, त्रीजो वैक्रियकाय-
योग, चोथोवैक्रिय मिश्र काययोग,अने पांचमो कार्म-
णकाययोग एम पांचयोग कह्यां छे. पृथ्वीकाय, अप-
काय,तेउकाय अने वनस्पतिकायना दंमके एक औदा-
रिक काययोग, बीजो औदारिकमिश्रकाययोग अने
त्रीजो कार्मण काययोग एम त्रणयोगकह्यां छे, सिद्धना
जीवो अयोगी छे. ॥ इति योगद्वार. ॥

अथ जंगणीसमुं उपयोग द्वार.

उपयोग—वस्तुस्वरुपने उंळखवा, जाणवा, प्रकाशवाने विषे जेउपयोगीहोय तेनुंनाम उपयोग ए जीवनुंलक्षण जीवस्वज्ञावचेतनारुपजाणवुं, ते उपयोग साकार अने निराकार एम वे प्रकारनो ठे तेमां दरेकवस्तुने नियमेकरीग्रहणकरवी एज तेनो परिणामरुपआकार तेजेनेकरीनेयाय ते पांचज्ञान अने त्रणअज्ञानरुप आठ प्रकारे साकार उपयोग जाणवो. अने ए लक्षणोथीजीन्न उपयोग ते निराकारचार प्रकारनां दर्शनरुपजाणवो. साकारने निराकार वंने मळीने बार प्रकारनां उपयोग कह्यां ठे.

मनुष्यना दंकके वारउपयोगहोयठे. नारकीनो एकदंकक, तिर्यंचपचेंद्रियनो एकदंकक तथा देवताना तेरदंकक ए पंदरदंककनेविषे केवळज्ञान, केवळदर्शन अने मनःपर्यव ज्ञानविना वाकीना नवउपयोगहोयठे. वेइंद्रिय तथा तेइंद्रियना दंकके एक मतिज्ञान वीजुं श्रुतज्ञान त्री-

छीतरतु जाणे छे तेम मिथ्यात्व मोहनीयना जोरथी रागद्वेष मोहादिक अढार दोषे सहीत अथवा संसारना हेतु एवा स्त्री हथियार वगेरे चिन्हे करीने सहीत होय तेने पण देवकरी माने धनधान्य स्त्री वगेरेमां आसक्त परिग्रहादिक गुरुना लक्षणे हीनने गुरु करी माने हिंसादिक अधर्मने धर्म करी माने एने मिथ्यात्व कहीए. एवा मिथ्यात्व उदयवंत जीव पण कोइक देखादेखीए, कोइ सुगतिनी अन्निलाषे तथा कोइ नडकजीत्र मोक्षहेतु क्रिया करे माटे तेने मिथ्यात्व गुणस्थानक कहीए अथवा एकांशे घटादिकनी मान्यता अविरुद्ध पण होय ते कारणे अने अक्षरनो अनंतमो न्नाग जीवने सदा सर्वदा उघाडो रहे अवराय नहि ते गुणने लीधे पण मिथ्यात्व उदयवंत जीवने मिथ्यात्व गुणस्थानक कह्युं छे. औपशमिक सम्यक्त्व वंत जीव अनंतानु बंधी कषायना उदये औपशमिक वमता क्षीरना स्वाद सरखो न्नाव मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेला जे जीवने होय ते सास्वादन सम्यक्दृष्टी गुणस्थान बीजुं जाणवुं.

मिश्रमोहनीना उदयथी जीवने रुची के अरुची ए बन्ने न होय एवा जे अध्यवसाय ते मिश्रदृष्टी गुणस्थानक त्रीजुं जाणवुं. विरति गुण जाणतो छतो पण अप्रत्याख्यान कषायोदये विरति आदरी न शके पण तत्वरुची, सम्यक्त्ववंत जीनवचन यथावस्थितपणे परिणमे तेनुं नाम अविरति सम्यक्दृष्टी गुणस्थानक चोथुं जाणवुं. प्रत्याख्यानी कषायोदये सर्व विरतिपणुं तो न आदरी शके, पण कांइक अंसे सावद्य योगनी विरति करे. जेम निरपराध, निरपेक्ष, संकल्पी, त्रसजीवने न हणवा, इत्यादिक सम्यक्त्व सहीत अध्यवसाय अथवा सम्यक्त्वसहीत एक नवकारसी करे एवा अध्यवसाय ते देशविरतिसम्यक्दृष्टीगुणस्थानक पांचमुं जाणवुं. देशविरतिगुणस्थानकथी अनंतगुण विशुद्ध सर्व विरतिरुप चारित्रना अध्यवसाय पण प्रमादकरीनेसहीतहोय तेनुं नाम प्रमतसंयत गुणठाणु छठु जाणवुं. प्रमादपांच प्रकारेछे, मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा, ते पांचप्रमादथीरहीत अनंतगुणविशुद्ध, निश्चय

चारीत्रे स्थिरतारुप अध्यवसाय ते सातमुं अप्रम
संयतनामनुं गुणस्थानक जाणवुं. पूर्वे नहि पामे
एवा अत्यंतविशुद्धअध्यवसायेकरी चारीत्रमो
नीनी एकवीस प्रकृति उपशमाववा अथवा खप
ववाने अर्थे रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्र
अने अपूर्वस्थितिबंध ए पांचवाना धुरसमय
करे ते आठमुंअपूर्वकरणगुणस्थानक जाणवुं; अथव
एक समये अनेकजीव ए गुणस्थानकेचढे पण अ
ध्यवसाय, शुद्ध, शुद्धतरादिके निवृत्ति एटले फेरफा
होय माटे ते आठमागुणस्थानकने निवृत्तिगुण
गुणस्थानक पण कहे छे. नवमे गुणस्थानके एक सम
घणा जीव चढे पण तेउना अध्यवसायमा फेरफा
न होय माटे तेनुं नाम अनिवृत्तिगुणस्थानक अथव
बादर एटले मोटाखंड अने संपराय एटले कषाय
ना आ गुणस्थानके जीव करे एटले कषायना उप
शमाववाके खपाववाने अर्थे घणाखंडकरे तेथी तेन
नाम बादरसंपरायनामा नवमुंगुणस्थानक जाणवुं
...म छे संपराय एटले किट्टीकृत लोभकषायनो

स्थानकना छेल्ला समये जीव ऋजु श्रेणीए मोक्ष प्रत्ये पामे छे.

पहेला मिथ्यात्व गुणस्थानकनी स्थिति अभव्यनी अपेक्षाए अनादीअनंत अने भव्यनीअपेक्षाए अनादीसान्त तथा समकीतथी पडेला जीवनी अपेक्षाए सादीसान्त तेथी जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट देशेउणी अर्धपुद्गल परावर्त्त जेटली कही छे. बीजा सास्वादन गुणस्थानकनी स्थिति जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी छ आवलीका जाणवी. त्रीजा गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्टथी पण अंतरमुहुर्त जेटली कही छे. चोथा अविरति सम्यक्गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमथी जाझेरी कही छे. पांचमुं देशविरति गुणस्थानक छठ्ठु प्रमतगुणस्थानक, अने तेरमुं सयोगीगुणस्थानक ए दरेक गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट [illegible] उणपूर्व क्रोड वर्षनी कही छे. सातमुं अप्रमत, [illegible] अपूर्वकरण, नवमुं अनिवृत्तिवादरसंपराय,

गुणस्थानके अने चोथा अविरतिसम्यकूदृष्टी गुणस्थानकने विषे, आहारकर कायपोग अने आहारक मिश्र कायपोगविना बाकीना तेरयोग कह्यां छे. त्रीजामिश्र गुणस्थानके चारमनना, चारवचनना अने औदारिक काययोग तथा वैक्रिय काययोग सहित दशयोग कह्यां छे. पांचमा देशविरत्ति गुणस्थानके चार मनना, चार वचनना अने औदारिक काययोग, वैक्रियकाययोग तथा वैक्रियमिश्रकाय योग सहित अगियार योग कह्यां छे. उपर कहेलां अगियार योगनी साथे आहारक काययोग अने आहारकमिश्र कायपोग सहीत तेरयोग छट्टा प्रमत्त गुणस्थानके, अने तेमांथी आहारकमिश्र अने वैक्रियमिश्रविना अगियार योग अप्रमत्त गुणस्थानके कह्यां छे. आठमा अपूर्वकरण गुणस्थानकथी बारमा क्षीण मोह गुणस्थानक सुधी दरेक गुणस्थानके, चारमनना, चार वचनना अने एक औदारीक कायपोग मळी नवपोग होय छे. तेरमा सयोगी केवळी गुणस्थानके,

सत्य वचनपोग, बीजु असत्यामृषा वचनपोग,

वरणीयकर्म, २ दर्शनावरणीयकर्म, ३ वेदनीय कर्म, ४ मोहनीय कर्म, ५ आयुकर्म, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म अने ८ अंतराय कर्म एवं आठ कर्म छे. प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थानकथी सातमाअप्रतमगुणस्थानक सुधीना सातगुणस्थानकमांथी एक मिश्रगुणस्थानक वर्जी वाकीना छए गुणस्थानके सातके आठ कर्म वांधे; आयु वंधकाळे आठ अने आयु न वांधतो होय त्यारे सातकर्म सदा सर्व जीव वांधे त्रीजुमिश्र गुणस्थानक, आठमुं अपूर्व करण अनेनवमुं अनिवृति वादरगुणस्थानक एवं त्रण गुणस्थानके आयु कर्मविना वाकीना सात कर्म वांधे. दशमा सुक्ष्मसंपरायगुणस्थानके एक आयु कर्म अने वीजु मोहनीय एवे कर्म वर्जी वाकीना ७ कर्म वांधे. अगियारमुं उपशांतमोह, वारमुं क्षीणमोह अने तेरमुं सयोगी केवळी एवं त्रण गुणस्थानके एक साता वेदनीजवांधे अने चौदमुअयोगीगुणस्थानक तो अवंधक छे त्यां ·२ जीवकर्म वांधे नहि एम कह्युं छे. मिथ्यात्वथी ·ी सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक सुधी आठे कर्मनो

उदय, अगियारमे तथा बारमे गुणस्थानके मोहनीय कर्मविना बाकीना सात कर्मनो उदय अने तेरमे तथा चौदमे गुणस्थानके, अघाती एवा वेदनीय, आयुः, नाम अने गोत्र एवं चार कर्मनो उदय होय छे. मिथ्यात्वथी प्रमत्त सुधी छ गुणस्थानकमांथी एक मिश्र गुणस्थानक वर्जी बाकीना पांच गुणस्थानके, सातके आठ कर्मनी उदीरणा, मिश्र गुणस्थानके आठ कर्मनी उदीरणा, अप्रमत्त, अपूर्व अने अनिवृत्ति गुणस्थानके आयुकर्म अने वेदनीय कर्मविना छ कर्मनी उदीरणा, सूक्ष्म संपराय गुणस्थानके छ अथवा पांच कर्मनी उदीरणा अने उपशांतमोहगुणस्थानके, वेदनीय, आयुः अने मोहनीयविना बाकीना पांच कर्मनो उदीरणा होय छे, तथा बारमा क्षीण मोह गुणस्थानक उपर कहेलां त्रण कर्मविनां पांचकर्मनी अने आवलीका बाकते ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय अने अंतराय कर्मनी उदीरणाटले तेथी बाकीना एक नामकर्म अने बीजुं गोत्र एवं बे कर्मनीउदीरणा होय तथा तेरमा सयोगीगुणस्थानके पण ते नाम अने गोत्र

विशेष छे, के, एकेंद्रियना पांच दंमकना जीवोतो, त्रण, चार, पांच अथवा छएदिशाओनो आहार ग्रहण करेछे, कारणके चौदराजलोक, सुक्ष्म एकेंद्रिये जर्यो छे, अने चौदराजलोक पछी अलोक छे, तेमा पुद्गलादिकनहिहोवाथी आहारछे नहि, माटे जे शुक्ष्मजीवो लोकनामध्यजागमां छे तेने तो छए दिशाओनो आहार होय, पण जे लोकने छेमे रहेला छे, एवा जीवोने उपर अलोक होवाथी उर्ध्वदिशीनो आहार होय नहि माटे ते जीवोनेउर्ध्वदिशीसिवाय बाकीनी पांच दिशानो आहार होय; एवीज रीते लोकना छेमे रहेला जीवोने वेदिशीए अलोक होय तेने चारदिशानो अने जेने त्रण दिशाएअलोक होय तेने बाकीनी त्रणदिशानो आहार होय एम जाणवुं.

॥ इति किमाहार द्वार ॥

अथ चोवीशमुं जीवजेद द्वार.

जीवजेद—कर्मगति जात्यादिकनी अपेक्षाए जीवनी विशेष व्याख्या तेनुं नाम जीवजेद. जीवना मुख्य बे जेद छे, एक मुक्तिना अने बीजा संसारी.

एक अपर्याप्तामळी त्रणसेंने त्रण मनुष्यना नेद थाय.
दश भुवनपति आठ व्यंतर, आठवाण व्यंतर, पंदर परमाधामी, दश तिर्यग्जृंभक, पांच चरज्योतिषी, पांच स्थिरज्योतिषी, नवलोकांतिक, त्रणकिल्विषिश्रा, बार देवलोक, नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमाननां मळीने नव्वाणुं तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां एकसोने अठाणुं नेद देवताना थाय. एवी रीते चौद नारकीना, अमतालीस तिर्यंचना, त्रणसेंने त्रण मनुष्यना अने एकसोने अठाणुं देवताना मळी सर्व संसारी जीवोना पांचसेंने त्रेशठ नेद कह्यां छे.

पृथ्वीकायना दंमके चार, अप्कायना दंमके चार, तेउकायना दंमके चार, वाउकायना दंमके चार तथा वनस्पतिकायना दंमके छ जीवनेद जाणवा, बे इंडियना दंमके बे, तेइंडियना दंमके बे, चौरिंडियना दंमके बे अने तिर्यंच पंचेंडियना दंमके वीश जीवनेद कह्यां छे. मनुष्यना दंमके त्रणसें ने त्रण ने तेर देवताना दंमके एकसोने अठाणुं जीवनेद पामीए.

॥ इति जीवनेद द्वार ॥

एक अपर्याप्तामळी त्रणसेंने त्रण मनुष्यना जेद थाय. दश जुवनपति आठ व्यंतर, आठवाण व्यंतर, पंदर परमाधामी, दश तिर्यग्जृंभक, पांच चरज्योतिषी, पांच स्थिरज्योतिषी, नवलोकांतिक, त्रणकिल्विषिया, बार देवलोक, नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमाननां मळीने नव्वाणुं तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां एकसोने अठाणुं जेद देवताना थाय. एवी रीते चौद नारकीना, अमतालीस तिर्यंचना, त्रणसेंने त्रण मनुष्यना अने एकसोने अठाणुं देवताना मळी सर्व संसारी जीवोना पांचसेंने त्रेशठ जेद कह्यां छे.

पृथ्वीकायना दंमके चार, अप्कायना दंमके चार, तेउकायना दंमके चार, वाउकायना दंमके चार तथा वनस्पतिकायना दंमके छ जीवजेद जाणवा, बेइंडियना दंमके बे, तेइंडियना दंमके बे, चौरिंडियना दंमके बे अने तिर्यच पंचेंडियना दंमके वीश जीवजेद कह्यां छे. मनुष्यना दंमके त्रणसें ने त्रण ने तेर देवताना दंमके एकसोने अठाणुं जीवजेद पामीए.

॥ इति जीवजेद द्वार ॥

अथ पचीसमुं वेदद्वार.

वेद–जे अभिलाष करवो ते वेद त्रण प्रकारेछे स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुंशक वेद ते दरेकना वळी बब्बे भेद छे, १ द्रव्यवेद अने २ भाववेद.

दाढी, मुछादिक मुख्य पुरुषाकार, पुरुषचिन्ह, वीर्यपतन, दढता अने धैर्यादि लक्षणे युक्त ते द्रव्य पुरुषवेद तथा जेम श्लेष्मनाजोरे खटाशनी इच्छा थाय खटाश भावे तेम जे कर्मना उदयथी स्त्रीनुं दर्शन, आलिंगन, मैथुनादिकनी इच्छा थाय ते भावपुरुषवेद. ते वेद घासना भडका जेवो जाणवो, जेम घासनी ज्वाळा एकदम उठे पण पाछी तरत समाइ जायछे तेम पुरुषवेदनी वेदना उदये विह्वळ थाय पण कार्य सिद्धि तरत शांत थाय. ते पुरुषवेद जाणवो.

स्तन, योनी प्रमुख अवयव सहित अने दाढी मुछादिक रहित ते द्रव्य स्त्रीवेद तथा जेम पित्तना जोरे मिष्टान्ननी इच्छा थाय मिष्ट भावे तेम जे कर्मना उदयथी पुरुष सुहामणो लागे, आलिंगन, मैथुनादिक अभिलाष उपजे ते भाव स्त्रीवेद. ते वेद बकरानी

एक अपर्याप्तामळी त्रणसेंने त्रण मनुष्यना नेद थाय. दश नुवनपति आठ व्यंतर, आठवाण व्यंतर, पंदर परमाधामी, दश तिर्यग्जृंनक, पांच चरज्योतिषी, पांच स्थिरज्योतिषी, नवलोकांतिक, त्रणकिल्विषिया, बार देवलोक, नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमाननां मळीने नव्वाणुं तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां एकसोने अठाणुं नेद देवताना थाय. एवी रीते चौद नारकीना, अमतालीस तिर्यंचना, त्रणसेंने त्रण मनुष्यना अने एकसोने अठाणुं देवताना मळी सर्व संसारी जीवोना पांचसेंने त्रेशठ नेद कह्यां ठे.

पृथ्वीकायना दंमके चार, अप्कायना दंमके चार, तेउकायना दंमके चार, वाउकायना दंमके चार तथा वनस्पतिकायना दंमके ठ जीवनेद जाणवा, बे इंडियना दंमके बे, तेइंडियना दंमके बे, चौरिंडियना दंमके बे अने तिर्यंच पंचेंडियना दंमके वीश जीवनेद कह्यां ठे. मनुष्यना दंमके त्रणसें ने त्रण नेतर देवताना दंमके एकसोने अठाणुं जीवनेद पामीए.

॥ इति जीवनेद द्वार ॥

देवो मनसेवी, एटले पोताने जोग योग्य देवी म
मांहे चिंतवे तेवारे ते देवी पोताना स्थानके बेठी
कीजे शृंगारधरी जवी बुरी काम चेष्टा मनमां
तवती जोगने माटे सावधान थाय तेवारे ते देव
त्यांज एटले पोताने स्थानके बेठा थका मनसंक
परम सुख परम तृप्ति पामेछे. देवीउंनी उत्पत्ति बी
देवलोक सुधी अने गमना गमन आठमा देवलो
सुधी छे. स्पर्शसेवी, रूपसेवी अने शब्द सेवीने प
कायसेवीनी पेठे शुक्रपुद्गल छे; ते शुक्रपुद्गल देव
नी शक्तिएकरीने देवांगनाना शरीर ने विषे शुक्र
संचरे तेथी देवांगनाने संजोग सुख उपजे छे, ते शु
क्रपुद्गल वैक्रिय होवाथी गर्भ उपजे नहि. नवमे
यक अने पांचअनुत्तरविमानना देवता अप्रवीचा
एटले विषय सेवा रहित छे माटे
प्रायें नहि माटे परा
सेवी देवताउंथी
काय
ने

थमां दरेकने उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति संख्याता हजार वरश सुधीनी जाणवी. तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्यनी उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति सात आठ नवनी कही छे.

गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यो संख्याते आयुष्ये सातनव करे अने आठमे नवे युगलीआं थाय ए आठे नवे करी उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति त्रण पल्योपम अने सात पूर्व क्रोड वरसनी गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्य नी जाणवी. त्रसकाय जीवोनी स्वकाय स्थिति बेहजार सागरोपमनी कही छे, कारणके कोइपण जीव वधारेमां वधारे त्रसकायमां बे हजार सागरोपम सुधी रही शके ने पछी अवश्य एकेंद्रिय थाय, संज्ञीनी स्वकाय स्थिति उत्कृष्टी नवसें सागरोपमनी जाणवीने पछी अवश्य असंज्ञीमां जाय एम कह्यु छे. देवता तथा नारकी मरीने पाछा देवता तथा नारकीमां जाय नहि अवश्य बीजी गतिए जाय. पृथ्वीकायादि उपर कहेला सघळा जीवोनी जघन्यकाय स्थिति अंतर मुहुर्तनी जाणवी.

॥ इति स्वकाय स्थितिद्वार ॥

थाय एम कह्युं छे.

दशभुवनपतिनादंडके जीव निरंतरउपजेछे अने चवेछे; परंतु कदीअंतरपडेतो जघन्यथी एक समयनो अने उत्कृष्टथी चोवीस मुहुर्तनो विरहकाळ एटले अंतरजाणवो एमज व्यंतर, ज्योतिषी तथा सौधर्मनेइशान देवलोकने विषे पण प्रत्येके उपजवा तथा चववानोविरहकाळ वधारेमांवधारे चोवीस मुहुर्तनो छे, तेवारपछीनिश्चे कोइजीव देवतापणे उपजेअथवाचवे. त्रीजा देवलोके नवदिवसने विसमुहुर्तनो, चोथादेवलोके बारदिवसअने दशमुहुर्तनो, पांचमादेवलोक साडीबावीस दिवसनो, छठा देवलोके पीस्ताळीसदिवसनो आठमाए सो दिवसनो, नवमाए तथा दशमाएप्रत्येके संख्याता मासनो अने अगियार तथा बारमाए संख्याता वरसनो विरहकाळ जाणवो. आ संख्याता वरस ज्यां सुधी सोवरसपुरानथाय त्यांसुधीनागणवा. पहेला, बीजा तथा त्रीजा ग्रैवेयके संख्याता सेंकडो वरसनो, चोथा, पांचमा अने छठा ग्रैवेयके संख्याताहजार

वरसनो अने सातमाथाठमातथा नवमाग्रैवेयके संख्यातालाखवरसनो उपजवाच्ववानो विरह काळ कह्योछे. ज्यांसुधी हजार वरस पुरा न थाय त्यां सुधी संख्याता सेंकना वरस, ज्यांसुधी लाखवरस पुरा नथायत्यांसुधी संख्याताहजारवरस अने ज्यांसुधी क्रोडवरसपुरानथाय त्यांसुधीना संख्यातालाखवरस-गणाय छे.एक सर्वार्थ सिद्धविना बाकीनाचारअनुत्तर-विमाननेविषे पल्योपमना असंख्यातमाभागजेटलो अने सर्वार्थ सिद्ध विमानने विषे पल्योपमनासंख्या-तमाभागजेटलो उत्कृष्ट विरहकाळकह्योछे. जघन्यथी एक समयनो उत्पाततथा च्यवन विरहकाळ सर्वदेव-लोकेजाणवो.

पृथ्वीकायादिपांचे एकेंद्रियनादंडके प्रत्येक समये जीवउत्पन्न थायछे अने चवेछे माटे ते एकें-द्रियनेविषे विरहकाळहोयनहि.

बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चोरिंद्रियना दंडके प्र-त्येके उत्पात अने च्यवननो विरह वधारेमां वधारे अं-तर्मुहूर्त अने जघन्यथी एक समयनो कह्योछे. गर्भज

अने तिर्यचपंचेंद्रियना दंडके, देवतानी पेठे एक बे त्रणथी यावत् संख्याता असंख्याता उपजेअने चवेछे. गर्भज मनुष्यने विषे उपजेतो एक समये वधारेमां वधारे संख्याता जीवो उपजे अने चवे, तथा संमुर्छिम मनुष्यने विषे देवतानीपेठे संख्याताने असंख्याता उपजे अने चवे छे. सिद्धगति (मोक्ष)ने विषे जीवो उपजेतो एक समये एक, बेथी मांडीने यावत् एकसोने आठ सुधि उपजे छे. ते सिद्धगतिमांथी पंडवानो अभाव होवाथी कोइ चवतो नथी.

॥ इति चवन तथा उपजवानु संख्याद्वार ॥

अथ बत्रीशमुं गतिद्वार.

गति–गमन करवुं–कया दंडकनो जीव कया कया दंडकेजाय एम जे कहेवुं ते अहिंगतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्भज तिर्यच अने गर्भज मनुष्य एम बे दंडकमां जाय छे. दशभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवो भवांतरे, पृथ्वीकाय, अप्का॰ वनस्पतिकाय, पंचेंद्रिय तिर्यच अने मनुष्य एम

अने तिर्यचपंचेंड्रियना दंमके, देवतानी पेठे एक बे त्रणथी यावत् संख्याता असंख्याता उपजेअने चवे.

गर्भज मनुष्यने विषे उपजेतो एक समये वधारेमां वधारे संख्याता जीवो उपजे अने चवे, तथा संमुर्छिम मनुष्यने विषे देवतानीपेठे संख्याताने असंख्याता उपजे अने चवे छे. सिद्धगति (मोक्ष)ने विषे जीवो उपजेतो एक समये एक, बेथी मांमीने यावत् एकसोने आठ सुधि उपजे छे. ते सिद्धगतिमांथी पमवानो अभाव होवाथी कोइ चवतो नथी.

॥ इति चवन तथा उपजवानु संख्याद्वार ॥

अथ बत्रीशमुं गतिद्वार.

गति–गमन करवुं–कया दंमकनो जीव कया कया दंमकेजाय एम जे कहेवुं ते आदिंगतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य एम बे दंमकमां जाय छे. दशभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवो भवांतरे, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, पंचेंड्रिय तिर्यंच अने मनुष्य एम

अेसव जीवभेदने विषे करे छे:-पहेलीथी छठी नारकीना जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्भजतिर्यंचपर्याप्ताने पांचगर्भजतिर्यंचअपर्याप्ता एवं चालीशजीवभेदने विषे जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकळ्यां जीवो तो पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ताने पांच गर्भज तिर्यंच अपर्याप्ता एमदशजीवभेदने विषे जायछे. दशभुवनपति, सोळव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्यग् भृंभक, दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्वीषिया एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकळ्या जीवो, पंदर कर्मभूमिनागर्भज मनुष्यअने पांच जातिना गर्भज तिर्यंच तथा बादर पृथ्वीकाय, बादर अपकायने बादरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रेवीस अपर्याप्ता एवं छेताळीस भेदमां जाय छे. सनत कुमारथी मांडीने सहस्त्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो, बे किल्वीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकळ्या जीवो,

त्रेसठ जीवन्नेदने विषे कहे छेः–पहेलीथी छठी नारकीना जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्भजतिर्यंचपर्याप्ताने पांचगर्भजतिर्यंचअपर्याप्ता एवं चालीशजीवन्नेदने विषे जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकळ्यां जीवो तो पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ताने पांच गर्भज तिर्यंच अपर्याप्ता एमदशजीवन्नेदने विषे जायछे. दशभुवनपति, सोलव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्बीषिया एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकल्या जीवो, पंदर कर्मभूमिनागर्भज मनुष्यअने पांच जातिना गर्भज तिर्यंच तथा बादर पृथ्वीकाय, बादर अपकायने बादरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रेवीस अपर्याप्ता एवं छेताळीस न्नेदमां जाय छे. सनत कुमारथी मांमीने सहस्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो, बे किल्बीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकल्या जीवो,

पांच गर्भज तिर्यच अने पंदर कर्म नूमिना मनुष्य नामळी वीस पर्याप्ता तथा वीस अपर्याप्ता एवं चाळीस नेदमां जाय छे. नवमा आणत देवलोकथी मांकीने बारमा अच्युत देवलोक सुधीना चार देवलोकना देवो अने नव ग्रैवयक तथा पांच अनुत्तरविमानना देवो एसर्वे मळीने अढार देवलोकना नीकल्याजीव, ते पंदरकर्म नूमिना मनुष्यमां जाय छे. नारकीनो एक दंमक तथा देवताना तेर दंमक मळीने चौद दंमकनी गति कही. जीवमात्र उत्पति काळे अपर्याप्तावस्थाए होय अने पछीथी पर्याप्ता थाय, ए अपेक्षाए अहीं नारकी तथा देवतानी गति पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता जीवनेदे कही छे तो ते करण अपर्याप्ता जाणवा. करण अपर्याप्ता जीव अवश्य पर्याप्ता थायज, तेथी संग्रहणी विगेरेमां कह्युं छे के नारकी तथा देवता चवीने पर्याप्ता तिर्यच अने मनुष्य थाय एमां कोइ विरोध नथी.

पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा बे इंडिय, ते इंडिय अने चौरिंडिय एवं छ दंमकनाजीवो

[illegible] आपणा दंडकमांथी नीकळी
[illegible] मनुष्य पर्याप्ता, पंदर ग
[illegible] एकसोने एक समुर्छिम मनु
[illegible] ए सर्वे मळीने एकसोने
[illegible] लिये पोतपोताना कर्मानुसा
[illegible] वाउकाय ए बे दंडकना नी
[illegible] तिर्यंचमां जाय छे.
[illegible]

[illegible] जलचरजीवो
[illegible] देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पांच
[illegible] जाय नहि माटे सर्व पांचसे ने
[illegible] ए हजार स्थानकना पर्याप्ता
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आयुष्ये आप आपणा दंडकमांथी नीकळीने, पंदर कर्म भूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अने अडताळीसतिर्यंचना ए सर्वे मळीने एकसोने ओगणएंशी जीवभेदने विषे पोतपोताना कर्मानुसारे जाय छे. तेउकाय अने वाउकाय ए बे दंडकना नीकळ्या जीव, अडताळीस भेदना तिर्यंचमां जाय छे. एवी रीते चावीस दंडकनी गति कही.

गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जळचरजीवो आठमांथी बारमा देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पांच अनुत्तर विमाने जाय नहि माटे सर्व पांचसो ने त्रेसठ जीवभेदमांथी ए अढार स्थानकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळी छत्रीस जीवभेद बादकरता बाकीना पांचसेंने सत्तावीस जीवभेदमां जळचर जीवो जाय छे. गर्भजउरपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेंने सत्तावीस जीवभेदमांथी सातमीअने छठी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार भेद वर्जीने बाकीना पांचसेंने त्रेवीस जीवभेदमां जाय छे. गर्भज

उपन्न थाय छे. एम सामान्ये चोवीशे दंडकनी आगति कही.

हवे चोवीशे दंडके, पांचसे त्रेसठ जीवभेदमांथी आगति कहेछे—पहेलो नरके. पंदरकर्मभूमीज गर्भज मनुष्य, पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने पांच समुर्छिमतिर्यंचपंचेंद्रिय एम पचीशभेदना जीव आवी उपजे. बीजी नरके. पंदरकर्मभूमिजगर्भज मनुष्य अने अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस भेदनाजीव आवी उपजे. त्रीजीनरके. पंदर कर्म भूमिज गर्भज मनुष्य तथा गर्भज जलचर, थलचर, उरपरिसर्प अने खेचर एम ओगणिश भेदमांहेथीजीव आवी उपजे. चोथोनरके पंदरकर्मभूमिज गर्भजमनुष्यतथा गर्भज जलचर थल चरअने उरपरिसर्प एम अढार भेदमांहेथीजीव आवी उपजे. पांचमी नरके पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य तथा जलचर अने उरपरिसर्प एम सत्तर भेदमांहेथी ... ी उपजे. छठीनरके पंदर कर्मभुमिज गर्भज ... गर्भज जलचर एम सोलभेद मांहेथी जीव उपजे. सातमी नरके पण पंदर कर्मभुमिज ग॰

मनुष्यो तथा पांचगर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस दंडकमांहेथी जीव आवी उपजे. बीजाथी आठमासुधी ना देवलोक, नव लोकांतिक अने बे किल्बीषिया एम सत्तर जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस दंडकमांहेथी जीवो आवी उपजे. नवमा आणत देवलोकथी मांडीने पांच अनुत्तर विमान पर्यंतना अढार देवलोकने विषे पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्यना भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते एक नारकीनो दंडक तथा तेर देवताना दंडक सर्वने पांच दंडके आगति कही।

पृथ्वीकाय अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण दंडकने विषे [illegible] तिर्यंच, एकमात्र एक समूर्च्छिम मनुष्य तथा पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता तथा दश [illegible] दश भुवनपति, वाणव्यंतर, [illegible] दश ज्योतिषी, सौधर्म तथा ईशान अने बे किल्बिषिया देवता एम सर्वे मळी

घसेने ग्रेताळीस नेदमांहेथी जीव आवी उपजे, तेउकाय, वाउकाय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने असंज्ञीतिर्यंच पंचेंद्रियने विषे एकसोनेएक समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य अपर्याप्ता अने अम्ताळीस नेदना तिर्यंच एम एकसोने ओगणापंसी नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. गर्नज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जलचर, थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचरने विषे एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्मनुमिज गर्नज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य अपर्याप्ता, अम्ताळीस नेदना तिर्यंच तथा पंदर परमाधामी, दश नुवनपति, सोळव्यंतर, दश तिर्यग् जृंनक, दश ज्योतिष, त्रण किल्बिषीया, नव लोकांतिक अने सौधर्मथी मांमीने आठमा सहस्रार पर्यंत् देवलोक तथा सात नारकी एम सर्वे मळीने घसेने सकसठ जीवनेद मांहेथी जीव आवी उपजे. त्रेवीस दंकके आगति कही.

समुर्छिम मनुष्यने विषे पंदर कर्म नुमिज म-

नुष्य पर्याप्ता, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता बादर अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, सुक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता त्रण विकलेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा वीस तिर्यंच पंचेंद्रियना अने एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य एम सर्वे मळीने एकसोने इंकोतेर भेदमांथी जीवो आवी उपजे. पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य ने चोथे उपर कहेला एकसोने इंकोतेर जीवभेद तथा नवाणु देवताना भेद अने पहेलीथी छठीनारकी सुधीना नारकी एम सर्वे मळीने बसेंने ठोतेर भेदमांहेथी जीव आवीउपजे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अने पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ता मळी वीसभेदमांहेथी जीवआवीउपजे. छप्पन्न अंतर द्वीपना मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता तथा पांच गर्भज तिर्यंचपर्याप्ता

अने पांच संमुर्छिम तिर्यच पंचेंद्रिय पर्याप्ता एम प-
चीसभेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवीरीते चोवीस
दंडके आगतिकही.

॥ इति आगतिद्वार ॥

अथ चोवीसमुं संपदा द्वार.

संपदा–पदवी त्रेवीसना नाम. १ अरिहंतनी
पदवी, २ चक्रवर्तिनी, ३ वासुदेवनी, ४ बळ देवनी,
५ केवळीनी, ६ साधुनी, ७ श्रावकनी, ८ सम्यकदृ-
ष्टिनी, ९ मंमलिकनी, ए नव मोटी पदवी तथा चौद
रत्न चक्रवर्तिना मेळवता त्रेवीस पदवी थाय. ते चौद
रत्नना नाम, १ सेनापति रत्न, २ गाथा पति रत्न,
३ वार्धिक रत्न, ४ पुरोहित रत्न, ५ स्त्रीरत्न, ६ ह-
स्तिरत्न अने ७ अश्वरत्न ए सात पचेंद्रीय रत्न ने
तथा १ चक्र रत्न, २ छत्र रत्न, ३ वज्र रत्न, ४
चर्म रत्न, ५ दंड रत्न, ६ मणिरत्न अने ७ कांगणि
रत्न, ए सात एकेंद्रिय रत्न जाणवा. एम नवमोटी
पदवी, सात पचेंद्रिय रत्न अने सात एकेंद्रिय रत्न
थइने त्रेवीस थया. चौद रत्नमां सेनापति ते देश

साधे, गाथापति ते धान्य रसवती नीपजावे, वार्धिकी आवास घर निपजावे, पुरोहित ते घाव साज करे, शान्ती कर्म करे अने विघ्न टाळे, स्त्री रत्न भोग साधन थावे, अश्व तथा हस्ति स्वारीकरवाने कामथावे, चक्ररत्न षट् खंडसाधतामार्गबतावे,खड्ग रत्न वैरीनुं मस्तक छेदे, छत्र रत्न चक्रवर्तिना हस्तस्पर्शे बारजोजनसुधी वीस्तरे तेथी बारजोजनसुधीछायाकरे चर्म रत्न ते कार्य उपन्येछते चक्रवर्तिनास्पर्शे बारजोजन विस्तरे ने तेमां प्रभातकाळे बीजवावे ते संध्याकाळे उपभोगमांआवे एवा शालिप्रमुखनेउत्पन्नकरे दंडरत्न ते वांकी भूमिसमी करे, काम पडे हजार जोजन धरतीवीदारे अने तमिस्रादिक गुफाना बार उघाडे, मणिरत्न ते हस्त अथवा मस्तके बांध्युंथकुं समस्तरोगहरे अने बार जोजन सुधी उद्योत करे, अने कांगणिरत्न ते वैताढय पर्वतनी गुफामां घणी भींतेयइने ओगणपचास मांडलाकरवा योग्य होय तथा तोला माप यथार्थ एवीरीते चौद रत्नना गुण अथवा उपयोग जाणवो.'चक्ररत्न, खड्गरत्न, छत्र रत्न अने

प्रमाण जाणवुं.

पहेली नरकथी नीकळ्या जीवो कर्मानुसारे ऊ
पर कहेली त्रेवीस पदवीमांथी सात एकेंद्रियरत्न
विना बाकीनीसोळपदवीपामे, बीजीनरकथी नीक
ळ्या जीवो कर्मानु सारे उपर कहेली सोळ पदवी
मांथी चक्रवर्तिनी पदवीविना बाकोनो पंदर पदवी
पामे, त्रीजी नरकना नीकळ्या जवो कर्मानुसारे
उपर कहेली पंदर पदवीमाथी एक वासुदेवनी अने
बीजी बळ देवनी पदवी विना बाकीनी तेर पदवी पामे
चोथी नरकथी नीकळ्या जीवो कर्मानुसारे उपर क
हेलीतेरपदवीमांथीतीर्थंकरनीपदवीविना बाकीनीबार
पदवीपामे,पांचमी नरकथी नीकळ्या जीवोकर्मानुसारे
ते बार पदवीमांथीकेवळीनी पदवीविना बाकीनी अ
गियारपदवी पामे,छठी नरकथी नीकळ्या जीवो कर्मा
नुसारे ते अगियार पदवीमांथी साधुजीनी पदवीविना
बाकीनो दश पदवीपामे अने सातमोनरकथी नीकळ्या
जीवो कर्मानुसारे समकितदृष्टीनो, अश्वरत्ननी अने
गज रत्ननी एम त्रण पदवी पामे, भुवनपति, वाण

पदवी विना वाकीनी अगियार पदवी पामे, सौधर्म अने इशान देवलोकना नीकळ्याजीवो कर्मानुसारे त्रेवीस पदवी पामे. त्रीजाथी आठमा देवलोक सुधीना अने नव लोकांतिकना नीकळ्याजीवो कर्मानुसारे त्रेवीस पदवीमांथी सात एकेंद्रिय रत्ननी पदवी विना वाकीनी सोळपदवीपामे. नवमाथी वारमा देवलोकना तथा नव ग्रैवेयक सुधीना नीकळ्याजीवो सात एकेंद्रिय रत्नो तथा अश्वने हस्ति विना वाकीनी चौदपदवीपामे. पांच अनुत्तर विमानना निकळ्याजीवो तिर्थंकरनी, चक्रवर्तिनी, वळ देवनी, केवळीनी, मंडळिकनी, साधुनी, श्रावकनी अने समकित दृष्टिनी एम आठ पदवी पामे. तिर्थंकर अने चक्रवर्तिने विषे कोइ जीवोने तिर्थंकरनी, चक्रवर्तिनी मंडळिकनी, समकितनी, साधुनी अने केवळीनी एम छ पदवीओ लाभे, वासु देवने विषे वासुदेवनी, मंडळिकनी अने समकीतनी एम त्रण पदवी लाभे. वळदेवने विषे कोइ जीवोने वळदेवनी, मंडळिकनी साधुनी, केवळीनी अने समकितनी एम पांच पदवी

स्थिति अंतर मुहुर्तनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी कही छे, नरदेवनी जघन्यस्थिति सातसेंवरसनी अने उत्कृष्ट चोरासीलाखपूर्वनीकहीछे, धर्मदेवनी जघन्यस्थिति अंतरमुहुर्तनी अने उत्कृष्ट देशे उणी पूर्वक्रोड वरसनी कही छे, देवाधि देवनी जघन्य स्थिति बहोंतेर वरसनी अने उत्कृष्ट चोरासीलाख पूर्वनी कहीछे अने भाव देवनी जघन्यस्थिति दशहजारवरसनी अने उत्कृष्ट तेत्रीसमसागरोपमनी जाणवी. द्रव्य देवचवीने देवता थाय, नरदेव चवीने नरके जाय अथवा कोइक चारित्र ग्रहण करी स्वर्गे अथवा मोक्षे पण जाय छे. धर्म देवचवीने वैमानिक अथवा मोक्षमां जाय छे. देवाधिदेव चवीने मोक्षे जाय अने भावदेव चवीने बादर पृथ्वीकाय, अपकायने वनस्पतिकाय तथा गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचमां जाय छे. सर्वथी थोडा नरदेव हाय, नरदेवथी देवाधी देव संख्यात गुणा. देवाधि देवथी धर्म देव संख्यात गुणा, धर्म देवथी द्रव्यदेव असंख्यात गुणा अने द्रव्य देवथी भावदेव असंख्यात गुणा जाणवा.

उव्यदेवनेविषे युगलीश्रा मनुष्य तथा युगली-श्रा तिर्यंच श्रने सर्वार्थसिद्धविना बाकीना सर्व स्थानकेथी जीवो श्रावी उपजे. नरदेवने विषे देवताना तेर दंमकने पहेली नारकीना नीकळ्या जीवो श्रावी उपजे, धर्म देवने विषे बहीने सातमी नारकी तथा तेउकायने वाउकाय श्रने युगलीश्रा मनुष्य तथा यु-गलीश्रा तिर्यंच वर्जीने बाकीना सर्व स्थानकना नी-कळ्या जीवो श्रावीने उपजे, देवाधिदेवमां किल्वी षिया सिवाय वैमानिक देवलोकना देवो तथा पहेली, बीजी श्रने त्रीजी नारकोमांथी नीकळ्या जीवो श्रा-वीने उपजे श्रने नावदेवने विषे तिर्यंच पंचेंद्रिय श्रने संज्ञी मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो श्रावीने उपजेबे.

॥ इति देवद्वार ॥

श्रथ बत्रीसमुं संजतिद्वार.

संजति–संयमी ते–१ संयती (संजमवाळा), २ संयता संयती, ३ असंयती, ४ व्रती (व्रतवाळा), ५ व्रताव्रती, ६ श्रव्रती, ७ पचखाणी, ८ पचखाणा पचखाणी, ए श्रपचखाणी, १० पंन्निया (पंक्ति),११

बालपंडिया, १२ वाला, १३ संवुका (संवृत), १४ संवुका असंवुका, १५ असंवुका, १६ जागरा(जागृत) १७ सुताजागरा, १८ सुता, १९ धम्मिया (धर्मिष्ट), २० धम्माधम्मिया, २१ अधम्मिया, २२ धम्मविवसाइया (धर्मव्यवशाइ), २३ धम्माधम्म विवसाइया, २४ अधम्मविवसाइया, २५ धम्मेठिया (धर्ममांस्थित), २६ धम्माधम्मेठिया अने २७ अधम्मेठिया. एम सत्तावीस प्रकारनुं विवेचन चोवीस दंडके नीचे प्रमाणे जाणवुं.

नारकी, देवता, एकेंद्रिय, विगलेंद्रिय एम बावीसदंडकना जीवो तथा समुर्छिम मनुष्य अने समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रियना जीवो, असंयती, अव्रती, अपच्चखाणी, वाला, सुता, असंवुडा, अधम्मिया, अधम्मेठिया अने अधम्मविवसाइया कह्यां छे. गर्भजतिर्यंच पंचेंद्रियना दंडके जीवो, असंयती, संयतासंयती, अव्रती, व्रताव्रती, अपच्चखाणी, पच्चखाणा पच्चखाणी, वाला, वालपंडिया, सुता, सुताजागरा, असंवुडा, संवुडा, अधम्मिया, धम्माधम्मिया, अध-

१३ कषाय, १४ लेश्या, १५ गुणस्थानक, १६ जव, १७ श्याकर्ष, १८ न्नाव अने १९ अल्प बहुत्व ए उंगणीस बोल संक्षेपे कहे छे.

सामायिक चारित्रना बे नेद छे, एक इत्वरिकने बीजुं यावत्कथिक तेमां इत्वरिक एटले स्वल्पकालनुं ने ते पहेला तथा छेला तिर्थंकरना वारामां होय अने यावत्कथिक एटले घणा कालनुं ते बावीश तिर्थं-करना वारामां तथा महाविदेह क्षेत्रमां होय छे.छेदो पस्थापनिय चारित्रना बे नेद छे, एक सातिचार छेदो पस्थापनियने बीजु निरतिचार छेदोपस्थापनिय,तेमां सातिचार एटले मुळ गुणघातिने प्रायछितरुप होय अने निरतिचार एटले इत्वरीक सामायिकवंत नव दिक्षितने वडिदिक्षारुप होय छे. परिहार विशुद्धि चा-रित्रना बे नेद छे, एक निर्विषमानसिकने बीजुं नि-र्विष्टकायिक परिहार विशुद्धिचारित्र, तेमां निर्विषमा नसिक एटले कर्म निर्जरा अर्थे तपो विशेष आचा-

: आ सेवक ए कल्पमां प्रवर्तता होय तेने होय

. निर्विष्ट कायिक एटले आ, चारित्रमां प्रवर्तता

ना अनुचारी एटले वैयावच्चादिकना करनारने होय छे. सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे भेदछे, एक विशुद्ध मानसिक अने बीजुं संक्लिष्ट मानसिक सुक्ष्म संपराय चारित्र. तेमां विशुद्धमानसिक एटले क्षपक श्रेणीए चमतां जीवने विशुद्ध पारिणामिकरुप अने बीजुं संक्लिष्ट मानसिक एटले उपशम श्रेणीथी पमतां जीवने संक्लिष्ट पारिणामिकरुप होयछे. यथाख्यात चारित्रना बे भेदछे, एक छाद्मस्थिकने बीजुं केवलिक. तेमां छाद्मस्थिक ते अगियारमा तथा बारमा गुणस्थानके वर्त्तता जीवोने होय अने केवलिक ते तेरमा तथा चौदमा गुणस्थानके होय छे. इतिभेद. सामायिक चारित्र तथा छेदोपस्थापनिय चारित्र. सवेदीने अथवा अवेदीने पण होय तेमां सवेदीने स्त्री, पुरुष अने नपुंसक एम त्रणे वेद होय अने अवेदी ते उपशम वेदी तथा क्षपकवेदीने होय छे. परिहार विशुद्धी चारित्र सवेदी एटले पुरुष वेदवाळाने अथवा नपुंसक वेदवाळाने होय छे. सुक्ष्मसंपराय चारित्र तथा यथाख्यात चारित्र अवेदी पण उपशम तथा क्षपकवेदी

ने होय छे. इतिवेद. पहेलेथी चार चारित्र सरागी होय अने यथाख्यात चारित्र वितरागी होय छे.इति राग. निर्ग्रंथना ७ भेद छे १ पोलाक, २ वकुस, ३ प्रतिसेवना कुशील, ४ कषाय कुशील, ५ निर्ग्रंथ अने ६ स्नातक. ज्ञानादिना अतिचार सेववे करी मतने कुशील करे ते पोलाक कहीए, शरीरनी सुश्रुषा विभुषा करे अथवा उपकरण बहु मुल्यजल उळता राखे संग्रहे तेने वकुस कहीए, मुल गुणतो पाळे सेवे पण उत्तरगुणमां कांइ कांइ नानो दोष लगाडे तेने प्रतिसेवना कुशील कहीए, संज्वलन कषायोदये करी कांइक अप्रशस्त परिणाम थाय पण मुळगुणमां तथा उत्तर गुणमां कांइ दोष लगाडे नहि तेने कषाय कुशील कहीए, संपुर्ण ग्रंथी रहित मोहनीय वर्जीत वितराग छद्मस्थ तेने निर्ग्रंथ कहीए अने घातीकर्म रहित सयोगी केवळी तथा सैलेशी प्रतिपन्न अयोगी केवळी तेने स्नातक कहेवायछे. सहुंसाधान्यनापुळा सरखा

: सहुंसाधान्यसरखां वकुस, मसळयाधान्य
... प्रतिसेवना कुशिल, उपण्या धान्य सरखां क-

शरीर. कर्म जुमिमां पांचे चारित्र होय अने अकर्म जुमि तथा अंतर द्वीपमां एके चारित्र होय नहि. इति क्षेत्र, उत्सर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए प हेले आरे एके चारित्र न लाजे अने बीजा, त्रीजा तथा चोथा आरामां पांचेचारित्रलाजे तथा पांचमां उठा आरामां एके चारित्रहोय नहि. आ अव सर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए पहेलाने बीजा आरामां एके चारित्र न होय, चोथा आरामां पांचे चारित्र होय,पांचमां आरामां एक सामायिकअने बीजुं छेदोपस्थापनिय एम बे चारित्र होय अने उठे आरे एके चारित्र होय नहि. इतिकाळ. नारकी, तिर्यंच अने मनुष्य ए त्रणे गतिमां चारित्रनो आराधक जायनहि पण देवगतिमां जाय तेमां सामायिक अने छेदोपस्थापनिय चारित्र आराधक जघन्य पहेले देव लोके अने उत्कृष्ट अनुत्तर विमाने जाय छे, परिहार विशुद्धी चारित्र आराधक जघन्य पहेले देवलोके अने उत्कृष्ट आठमे देवलोके जाय, सुक्ष्म संपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्रना आराधक अनुत्तर विमाने

एकेंद्रियनापांचदंडकथने विगलेंद्रियना दंडक एम आठ दंडकना जीवोने तथा समुर्छिम मनुष्य अने समुर्छिमतिर्यचपंचेंद्रियने एक जा भेदनोज होय छे. तिहना जीवोने एके वेदनी नथी.

॥ इति जराउद्दार ॥

अथ अष्टत्रीसमुं परिग्रहद्दार.

परिग्रह-संग्रह ते त्रण प्रकारे छे. १ कर्म परिग्रह, २ शरीरपरिग्रह अने ३ बाह्य भंडोपगरण (भाजनादि उपकरण) परिग्रह.

नारकी तथा एकेंद्रियने एक कर्म परिग्रह अने बीजो शरीर परिग्रह एम बे परिग्रह होय छे. देवता तथा त्रण विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्यने त्रणे परिग्रह होय छे.

॥ इति परिग्रहद्दार ॥

अथ ओगणचाळीसमुं अल्प बहुत्वद्दार.

अल्पबहुत्व एटले सर्व जीवोमां कया दंडके जीवो थोडा अने कया दंडके जीवो घणारे एम जे कहेवुं तेनुं नाम अहिं अल्पबहुत्व जाणवुं.

सर्वथी गर्भज मनुष्य थोडा, तेथी बादर अग्नि-कायना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी वैमानिकना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी भुवनपतिना दंडके जीवो असंख्यातगुणा तेथी नारकीना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी व्यंतरना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी ज्योतिषीना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी चौरिंद्रियना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडके जीवो विशेषाधिक, तेथी तेइंद्रियना दंडके जीवो विशेषाधिक, तेथी बे इंद्रियना दंडके जीवो विशेषाधिक, तेथी पृथ्वीकायना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी अपकायना दंडके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी वाउकायना दंडके जीवो असंख्यातगुणा अने वाउकायथी वनस्पतिकायना जीवो अनंतगुणा कह्यां छे.ए प्रमाणे सामान्य चोवीश दंडके जीवोनुं अल्पबहुत्व कह्युं.

विशेष व्याख्याए जीवो संबंधी अल्पबहुत्वना अत्राणुं भेदकहेछे गर्भजमनुष्यो सर्वे थकी (७९२२८१६२, ५१४२६४३, ३७५९३५४, ३९५०३३६ ...

संख्यातगुणी ३१ तेथी पहेली नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, ३२ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनि या पुरुष असंख्यातगुणा, ३३ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ३४ तेथी थलचर पंचेंद्रिययोनिया पुरुष संख्यातगुणा, ३५ तेथी थलचर पंचेंद्रिय योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ३६ तेथी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिया पुरुष संख्यातगुणा, ३७ तेथी जलचर तिर्यंच योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ३८ तेथी व्यंतर निकायना देवो संख्यातगुणा, ३९ तेथी व्यंतर देवीयो बत्रीसगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ४० तेथी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा, ४१ तेथी ज्योतिषीनी देवीयो बत्रीसगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ४२ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनी या नपुंसक संख्यातगुणा, ४३ तेथी थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनि या नपुंसक संख्यातगुणा, ४४ तेथी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनि या नपुंसक संख्यातगुणा, ४५ तेथी चौरिंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा, ४६ तेथी सर्व पंचेंद्रिय पर्याप्ता

देशीकी संज्ञा अने ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा. घणा काळनी वात जाणे एटले त्रिकालिक वस्तुनुं जाणपणुं ते दीर्घ कालिकी नामे संज्ञा जाणवी. पोताना शरीर रक्षणने अर्थे इष्ट वस्तुमां प्रवर्त्ते अने अहित वस्तुथी निवर्त्ते तेनुं नाम हितोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. द्वादशांगीना जाणनार सम्यग् दृष्टि श्रुतज्ञानने जे जाणे तेनुं नाम दृष्टिवादोपदेशीकी संज्ञा जाणवी.

भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ए देवताना तेर दंडक तथा तिर्यंचनो एक दंडक अने नारकीनो एक दंडक एम पंदर दंडके, एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय कारणके आ अमुक काम कर्युं, अमुक काम करुं छुं, अने अमुक काम करीश एम अतित, अनागत अने वर्तमान ए त्रणकाल विषयिकनुं जाण पणुं छे माटे ते दीर्घकालिकी संज्ञा जाणवी. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रियना दंडके जीवोने एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय छे, कारणके एमने भाव मन छे माटे कांइक मनोज्ञान सहित वर्तमान विषे इष्ट वस्तुनी प्रवृत्ति अने अनिष्ट वस्तुनी

ग्राम, गढ, पोळ, कोठा, वहाण, रथ अने गाडादिक मपाय छे जेमके रुषभदेवना वारे रुषभदेवना अंगुले मापीने लोको घर, हाट, कुवा प्रमुख करता हता अने श्रीमहावीर स्वामीना वारे महावीर स्वामीनां अंगुले मापीने घर, हाट, कुवा प्रमुख लोको करता हता ए प्रमाणे आत्म अंगुलनुं स्वरुप जाणवुं.

अनंता सुक्ष्म परमाणुए एक व्यवहार परमाणु थाय, ते व्यवहार परमाणु मंदिरने विषे छिद्रादिकथी आवता सूर्यना किरणोमां जे उडतां रजना कणीया देखाय छे, तेना अनंतमा भाग जेटलो झीणो होय छे, अनंता व्यवहार परमाणुए एक उष्ण सन्नियो थाय, आठ उष्ण सन्निये एक सण सन्नियो थाय. ए आठ सण सन्निए एक उर्ध्वरेणु अने आठ उर्ध्वरेणुए एकत्रसरेणु थाय छे. ते त्रसरेणु बेइंद्रियादिक त्रस जीवोने चालतां जे रज उडे छे, तेना एक कणीया बराबर जाणवो. आठ त्रसरेणुए एक रथरेणुए थाय; तेरथरेणु रथादिक चालतां जे रज उडे छे ते मांहेना एक कणीया जेवडो जाणवो. आठ रथरेणुए कुरुदे-

जाणवुं. पागांतरे हजार उत्सेघांगुले करीने एक प्रमाण अंगुल थाय एम लख्युं छे माटे बहु श्रुत कहे ते सत्य जाणवुं. चोवीस प्रमाण अंगुले एक हाथ, चार हाथे एक धनुष्य, वे हजार धनुष्ये एकगाउ अने एवा चार गाउए एक जोजन थाय छे. शाश्वता पर्वतो, द्वीपो, समुद्रो, नदीउं, ड्रहो, पृथ्वी, लोक, अलोक, नरकावासा अने विमानो विगेरेनुं लांबपणुं, पहोळपणुं तथा परिधि विगेरेना माप प्रमाण अंगुले कह्यां छे.

हवे पल्योपमनुं स्वरुप कहे छे. एक उद्धार पल्योपम, बीजो अद्धापल्योपम अने त्रीजो क्षेत्र पल्योपम एवी रीते त्रण प्रकारना पल्योपम छे, ने ते दरेक नावळी एक बादर अने बीजो सुक्ष्म एम बेबे भेद गणतां पल्योपम छ प्रकारना थाय छे.

उत्सेघांगुले एक जोजन एटले चार गाउलांबो, पहोळोने उंचो एवो एक कुपाकार पल्य (पालो) कल्पीए, ने ते पल्य मध्ये देवकुरु अथवा उत्तर कुरुमां उत्पन्न थयेला एवा सात दिवसनो घेटो होय ते घेटानावाळ एक उत्सेघांगुल प्रमाण लइ तेना सात वार आठ आठ खंड करीए त्यारे ए एक अंगुल प्र-

नरीए पछी ते कुपमांथी समये समये एकेको खंम काढीए एम काढतां काढतां जेटलाकाळे एपल्यखाली थाय तेटला काळने सुक्ष्मउद्धार पल्योपम कहे छे. सुक्ष्म उद्धार पल्योपम असंख्याता समय एटले संख्याता क्रोम वरसनो होय छे. पचीस कोमा कोमी उद्धार पल्योपमना जेटला समय थाय तेटला द्वीप अने समुद्रो आतिर्छा लोकमां छे एम कह्युं छे.

पूर्वोक्तयोजन प्रमाण पल्य वादरवालाग्रेभरी अने तेमांथी सोसो वर्षे एकेक वालाग्र काढतां काढतां ते पल्य जेटलाकाळे खाली थाय तेटलाकाळने वादर अक्षा पल्योपम कहे छे. वादर अक्षापल्योपम संख्याता क्रोम वरस प्रमाण थाय. हवे तेहीज वादर खंमना पूर्वोक्त रीते असंख्याता सुक्ष्म खंम कल्पीए ने ते कल्पेला खंममांथी एकेको खंम सोसो वर्षे काढीए ने एम सुक्ष्म खंम काढतां काढतां जेटलाकाळे ते पल्य खाली थाय तेटला काळने सुक्ष्म अध्धापल्योपम कहे छे. सुक्ष्म अक्षापल्योपम असंख्याता क्रोम वर्ष

दश कोमाकोमी सुक्ष्मअक्षापल्योपमे एक अक्षा

७२	८	मांयी-तेमां	मां-तो
७५	१२	द्रवेंद्रियनो	द्रवेंद्रिय ते
७५	१२	अभ्यंतर	अभ्यंतररुप
८५	११	लगे एक एक	लगे लग एक
९२	१३	फोरवे छे,	तेनुं नाम पर्याप्ति कहेवाय छे.
११२	१	जाणे छे	देखे छे
११३	१	जीवने रुची	जीवने धर्मनी रुची
११५	१२	पडे पण मरण पामे नहि-	पडे के मरण पामे नहि
११६	६	तेथी	०
११८	१७	केळवी	केवळी
१२४	४	एक	एक एम
१२५	४	आहारभिलाप	आहाराभिलाप
१२५	१७	माटे	माटे देवोने
१२६	२	वरसथी	वरसथी उपर
१३७	१२	पचारनार,	समकित थवा न
१३८	५	ने	ते
१४१	१	नीलक	तीलक
१४२	२	ए-	एम
१४३	१	समुद्र,	ते अपकाय अने
१४६	११	देवलोक	देवलोके
१५१	१८	पांच	पांचसे
१५२	९	साळ	सोल
१७०	५	देववी	देवनी

સત કબીર સાહેબના
૯૦૦ ચુંટી કહાડેલા દોહરાઓ
તેમજ થોડાંક ભજનો
અને તેમનાં ખાસ ત્રીસ જંત્રો.

(અર્થ સાથે)

રચનાર

બેહેરામજી પીરોજશા માદન

ચોથી આવૃત્તિ - ૨૦૦૦ પ્રત.

પ્રગટ કરનાર,

જેહાંગીર બી. કરાણીના છોકરાઓ,

પુસ્તકો વેચનાર અને પ્રગટ કરનાર,

પારસી બજાર, કોટ, મુંબઈ.

૧૯૨૧.